द्वितीय अध्याय

राजी सेठ के उपन्यासों का अध्ययन व अनुवाद कार्य

द्वितीय अध्याय

राजी सेठ के उपन्यासों का अध्ययन व अनुवाद कार्य

- राजी सेठ का जीवन
- राजी सेठ का व्यक्तित्व
- साहित्य सृजन
- प्रेरणास्त्रोत
- साहित्यिक प्रभाव
- राजी सेठ के महिला लेखन के विषय में विचार
- राजी सेठ के साहित्य एवं समाज के संदर्भ में विचार
- राजी सेठ के पत्र-पत्रिकाओं के विषय में विचार
- राजी सेठ के दृश्य-श्रव्य माध्यम के विषय में विचार
- राजी सेठ की हिंदी कहानी की वर्तमान स्थिती पर राय
- राजी सेठ का कृतित्व
- राजी सेठ के उपन्यास
- तत-सम की कथावस्तु एवं कथ्य
- तत-सम के प्रतिनिधि पात्र
- तत-सम के गौण पात्र
- निष्कवच उपन्यास: पहले वृत्तांत कथावस्तु
- निष्कवच उपन्यास: दूसरा वृत्तांत कथावस्तु
- निष्कवच का कथ्य
- निष्कवच उपन्यास के पहले वृत्तांत के मुख्य पात्र
- निष्कवच उपन्यास के पहले वृत्तांत के गौण पात्र
- निष्कवच उपन्यास के दूसरे वृत्तांत के मुख्य पात्र
- निष्कवच उपन्यास के दूसरे वृत्तांत के गौण पात्र
- राजी सेठ का अनुवाद का कार्य

द्वितीय अध्याय

राजी सेठ के उपन्यासों का अध्ययन व अनुवाद कार्य

राजी सेठ एक ऐसी कथाकार है, जिन्होंने कहानी, उपन्यास के साथ कविता, निबंध, अनुवाद आदि साहित्य की विधाओं में अपनी अनोखी प्रतिभा का परिचय दिया है | राजी सेठ का लेखन में प्रवेश ऐसे हुआ जहाँ आम तौर पर प्रतिभाएँ जिस उम्र तक आते आते शीर्षस्थान पर पहुँच जाती है, उस उम्र में उन्होंने लेखन की शुरुआत की | वह भी परिपक्वता और ताजगी के साथ |

राजी सेठ आठवें दशक की महिला लेखिका है | उन्होंने अपनी रचनाओं में वहीं रचा है जिस पर उनकी पूरी पकड़ है या अनुभव के विकास क्रम की पकड़ में आया है | "राजी सेठ अपनी रचना, कथ्य या चरित्र में अपने को इस तरह नियोजित कर लेती हैं जैसे गहरे खोदते-खोदते कोई लगातार वृत्त को छोटा बनाता जाता है |"[१]राजीजी ने कई वैविध्यपूर्ण उत्कृष्ट रचनाएँ हिंदी साहित्य को दी हैं |उन रचनाओं में उनके दो उपन्यास महत्त्वपूर्ण हैं | राजीजी के उपन्यासों का अध्ययन करने से पूर्व ऐसी महान लेखिका के जीवन पर प्रकाश डालना अनिवार्य है | अतः प्रस्तुत अध्याय में सबसे पहले राजी सेठ के जीवन परिचय पर प्रकाश डाला है |

राजी सेठ का जीवन :-

जन्म तथा शिक्षा

राजी सेठ का जन्म एक संपन्न क्षत्रिय परिवार में ४ अक्तुबर.१९३५ में नौशेहरा, छावनी (उत्तर पश्चिम सीमांत प्रदेश)

में हुआ | जहाँ उनके माता-पिता १९४२ तक रहे और उसके बाद लाहौर में आगमन एवं आवास हो गया, परंतु भारत विभाजन के भयानक दुःखांत के बाद उनके परिवार को लाहौर छोड़ना पड़ा और उत्तर प्रदेश के एक शहर शाहजहांपुर में आ बसे | शाहजहांपुर में इनका पैतृक परिवार आ बसने के परिणाम स्वरूप प्राथमिक शिक्षागत श्रेणी (पांचवीं) से आगे शाहजहांपुर में प्राप्त की | इंटरमिडियट वहीं के राजकीय विद्यालय से किया,पर उस समय वहाँ लड़कियों के लिए कोई स्नातक स्तरीय संस्था नहीं थी | उस समय सह-शिक्षा और स्त्री-शिक्षा का प्रचलन भी काफी कम था | अत:बी.ए.की शिक्षा प्राप्त करने के लिए राजीजी को लखनऊ विश्वविद्यालय भेजा गया जहाँ उन्होंने छात्रावास में रहकर स्नातक स्तर की शिक्षा प्राप्त की |

राजी सेठ ने देश विभाजन की कठिनाईयाँ झेलते माता-पिता के जीवन को रूबरू देखा था |"भारत विभाजन के कारण अनेक परिवारों को दोनों ओर विनाश का सामना करना पड़ा | शारीरिक, मानसिक व आर्थिक हनन भरपूर हुआ | राजीजी को आगे पढ़ाने का फ़ैसला पारिवारिक दृष्टि से कठिन फ़ैसला था | आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी और दोनों भाई परिवार के साथ नये सिरे से आजीविका के लिए संघर्ष कर रहे थे | छोटा भाई जो राजीजी से अढ़ाई साल बड़ा था, उसकी पढ़ाई छुड़वा देनी पड़ी थी | भारतीय मापदंड से यह एक विचित्र वस्तुस्थिति थी कि लड़कियाँ पढ़ रही हैं और भाई रोटी के लिए संघर्ष कर रहे हैं |"[२] भाईयों और बहनों दोनों में रिश्ता आजीवन प्रगाढ़ और सदाशयी रहा है | लेखिका को होस्टल भेजने में बड़े भाई का योगदान रहा क्योंकि बड़े भाई ने इनकी आँखो में अधूरी आकांक्षाओं के तैरते

चित्र देख लिए थे | मगर पारिवारिक कारणों से बी.ए की पढ़ाई लेखिका को छोड़नी पड़ी |

माता-पिता :-

राजीजी के लेखकीय व्यक्तित्व के निर्माण में उनके माता-पिता का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है | इनके पिता देशराज त्रेहन स्वभावतः कर्मठ, स्वाभिमानी, देशभक्त, सुधारवादी और आदर्शवादी थे | इस दौर में उनका एक एक विचार व्यावहारिकता के निकष पर परख कर देखा गया | कथनी और करनी में फ़ासला न होने से वह आजीवन सम्मान के पात्र बने रहे | इनकी माँ लाजवंती अशिक्षित थी परंतु चिंतनशील,अनुशासनप्रिय,दूरदर्शिनी तथा अंतर्दृष्टि की स्वामिनी थी | संकटासीन परिस्थितियों में इनका परिवार अनेक बड़ी-बड़ी कठिनाइयों से गुजरा,किन्तु उन अभावग्रस्त दिनों की कटुतामंडित छाप इनके मन पर नहीं है | इसका श्रेय माता-पिता को है, जिनकी शिक्षा का सारांश यह था कि "धन की कमी सूख की कमी नहीं है |"[३] पिता का मानना था कि धन-संपत्ति की हानि कोई क्षति नहीं होती | उधर जननी की शिक्षा और भी व्यावहारिक थी-"व्यक्ति को जीवन में कैसी भी स्थिति में अपना तालमेल बैठाने की अनिवार्य सामर्थ्य व मानसिकता का होना आवश्यक है |"[४]

शाहजहांपुर में उस समय लड़कियों के लिए स्नातक विद्यालय नहीं था | इस कमी को पूरा करने के लिए राजी सेठ के पिताजी देशराज त्रेहन ने वहाँ के लड़कों के 'गाँधी फ़ैज-ए-आम कॉलेज' अपनी छोटी बेटी को भेजकर सह-शिक्षा का प्रारंभ करवाया | वहाँ राजी सेठ की बहन पहली व कुछ समय तक अकेली छात्रा थी | राजी सेठ स्वयं कहती है-"माता-पिता खुले विचारों के,

स्वतंत्रचेता और मूल्यधारक चेतना के धनी थे | पिता ने तो पूरे होश-हवास में,आस्था और उत्साह से आर्य समाज के नवोदित सुधारवादी आन्दोलन से अपने को जोड़ रखा था जहाँ स्त्रियों की शिक्षा-दीक्षा, आत्मस्वातंत्र्य का निर्माण अहम् मुद्दा था |"[५]

माता के बारे में राजी कहती है-"माँ ने भी गुण-संपन्न बनाने की मुहिम में कभी ढील नहीं दी | उनका अनुशासन कठोर था | शिक्षा के हक़ में कुछ ज़्यादा ही निर्मम | घर में परिस्थिति कैसी भी हो,पढ़ने-लिखने के अनुशासन में कोई ढील नहीं | मैं ऐसे ही गहरे संस्कारी परिवेश में बड़ी हुई | इसे एक तरह से डिग्री-विहीन संस्कारित प्रबोधन की पृष्ठभूमि कहा जा सकता है | जीवन दर्शन और जीवन विवेक को निर्मित करने में मेरे माता-पिता की बड़ी व्यावहारिक भूमिका रही है |"[६]

भाई-बहन :

राजी सेठ के दो भाई तथा दो बहनें हैं | बड़े भाई का नाम कृष्णलाल था | उनकी पत्नी का नाम श्यामा था | वे दोनों अब इस दुनिया में नहीं हैं | छोटे भाई का नाम यशपाल तथा उनकी पत्नी का नाम उषा हैं | राजीजी की दो बहनें राज खोसला तथा डॉ.कमलेश सिंह हैं | राज खोसला गृहिणी हैं तथा उनके पति इंद्रदेव खोसला एडवोकेट हैं | डॉ.कमलेश सिंह ने 'आत्मकथा का उद्भव व स्वरूप' पर पीएच.डी.की है | उनके पति मनमोहन सिंह आय.पी.एस अधिकारी हैं |

वैवाहिक जीवन :-

राजी सेठ का विवाह १९५७ में उत्तर प्रदेश के एक जमींदार घराने में हुआ जो पीढ़ियों से शाहजहांपुर में बसा था | विवाह में दोनों परिवारों और दोनों जनों की इच्छा भी समवेत रही | "वह

परिवार भावात्मक दृष्टि से पारस्परिक रूप से एक गुन्था हुआ परिवार था,जिसमें सामंती परंपरा और वंश गौरव के प्रति कुछ अधिक आत्मसजगता थी |"[७]ससुर एडवोकेट थे | जो हर चीज़ को कायदे कानून की नजरिये से देखते थे | वे अनुशासन प्रिय थे | उनका देहांत राजीजी के विवाह से पूर्व ही हो चुका था | राजी सेठ के पति निरंजननाथ सेठ हैं जो उच्च शिक्षा प्राप्त, भारतीय राजस्व सेवा में पदाधिकारी रहे | राजी सेठ की साहित्य यात्रा में उन्हें अपने पति का साथ और सहयोग मिलता रहा | रमेश दवे कहते हैं- "यदि एक साहित्यकार और असाहित्यकार (लेकिन साहित्य प्रेमी) दांपत्य जीवन का कोई रोल-मॉडल तलाशा जाए तो वह राजी सेठ और पति सेठ साहब में आसानी से मिल सकता है |"[८]

राजी सेठ की सासूजी जमींदार परिवार से थी | सास के साथ उनका रिश्ता मधुरता का रहा | राजी सेठ का एक पुत्र राहुल,पुत्र वधु उज्ज्वला और पोती मानसी ये तीनों अमेरिका में रहते हैं |

व्यक्तित्व :-

व्यक्तित्व व्यक्ति के पूर्ण परिचय का प्रतीक है | किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व भिन्न-भिन्न पहलुओं, पृष्ठभूमियों के बारीक रेशों से बना होता है | व्यक्ति के संपूर्ण जीवन का लेखा-जोखा ही उसका व्यक्तित्व होता है, जिसमें उसकी मानसिक एवं शारीरिक प्रकृति का समावेश होता है | व्यक्तित्व शब्द का कोशगत अर्थ है- "किसी व्यक्ति की निजी विशिष्ट क्षमताएँ,गुण,प्रवृत्तियाँ आदि जो उसके उद्देश्यों,कार्यों,व्यवहारों आदि में प्रकट होती है और जिनसे उस व्यक्ति का सामाजिक स्वरूप स्थिर होता है |" वस्तुतः किसी भी लेखक के साहित्य सृजन को भली प्रकार से समझने के लिए

उसके व्यक्तित्व को समझना अनिवार्य है | व्यक्तित्व को बाहय और आंतरिक इन दो भागों में बाँटा जाता है |

राजी सेठ को करीब से जानने तथा समझने, उनके बाहय व्यक्तित्व से प्रत्यक्ष परिचित होने का संयोग बन नहीं पाया | राजीजी के बाहय व्यक्तित्व को उनके फोटो के माध्यम से समझने का प्रयास किया है | राजीजी से मेरी बातचीत दूरभाष पर होती थी | उसी बातचीत के आधार पर,उनके साहित्य और उनके साहित्य पर लिखे गए समालोचनात्मक पुस्तक के माध्यम से उनके आंतरिक व्यक्तित्व को भी समझने का प्रयास किया है |

बाहय व्यक्तित्व :-

राजी सेठ का बाहय व्यक्तित्व प्रभावशाली है | मध्यम कद, गोरा रंग, आँखों पर बड़े फ्रेम का चश्मा, माथे पर लाल बिंदी तथा सादगी से भरा हुआ रूप उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व का एहसास कराती है | राजी सेठ स्वभाव से कोमल, निश्छल, स्नेहमयी, मृदुभाषी, मिलनसार है | राजी सेठ स्वाभिमानी है | वह न किसी की सहानुभूति पाना चाहती है और नहीं बाँटना चाहती है | प्रदर्शन विहीन, धीर गंभीर, संस्कारी आत्मा जैसा उनका व्यक्तित्व हैं | राजी सेठ ने भ्रमण भी खूब किया है | वे अमेरिका, फ़्रांस, जर्मनी, इटली, ऑस्ट्रिया, नेपाल, स्विट्जरलैण्ड ,बेल्जियम, इंग्लैंड आदि देशों में भी रह चुकी हैं |

आंतरिक व्यक्तित्व :-

किसी भी रचनाकार के संपूर्ण व्यक्तित्व से परिचित होने के लिए उसके बाहय व्यक्तित्व के साथ साथ अंतर्गुणों से परिचित होना भी जरुरी हैं | आंतरिक व्यक्तित्व व्यक्ति के चारित्रिक गुणों का परिचायक होता है |

राजी सेठ का व्यक्तित्व आत्मसंयत और सद् भावात्मक है | उससे राजी सेठ अपने तनावों की मुक्ति स्वयं में खोज लेती है | वे कभी आक्रामक नहीं होतीं बल्कि वे व्यक्तित्व और कथा रचना दोनों स्तर पर आक्रामकता से बचती है | राजी सेठ की अन्य एक विशेषता यह भी है कि वे छद्म में जीना पसंद नहीं करतीं | राजी सेठ वैसे भी अंतर्मुखी और अल्पभाषी हैं, उनकी आंतरिक लोक को खंगालना मामूली बात नहीं है | राजी सेठ के व्यक्तित्व के संदर्भ में डॉ.शुकदेव सिंह के विचार इस प्रकार है- "राजी सेठ से मुझे डर लगता है | वे बहुत कुलीन, संपन्न, इलीट और महान लगती हैं | मैं उन्हें राजी और सेठ दोनों कहना चाहता हूँ | वे कभी किसी बात पर राजी होंगी, इसका जल्दी विश्वास नहीं होता |"[१०]

राजी सेठ अहंकार से मुक्त है | कुसुम अंसल राजीजी की इस विशेषता के बारे में कहती है-"मैंने राजी को अहंकार की तरकीबें जुटाते कभी नहीं देखा | वह किसी लेखकीय तकरार, पुरस्कारों की आपाधापी में बेदम होती लेखिकाओं की कतार से अलग खड़ी हैं | कंसंट्रेशन उनका लेखन है, उनकी मित्रता उनके पात्रों से है,उनका वार्तालाप पुस्तकों से है |"[११]उनकी इसी विशेषता के कारण उनके दांपत्य जीवन में एकरसता है |"एक दूसरे के प्रति इतनी सहजता, इतनी आत्मीयता, इतना प्रेम और सम्मान और अगर खीझ भी है तो ऐसी जैसे माँ की बच्चों के प्रति होती है, विह्वल, विन्रम, अहिंसक, अक्रुद्ध जिसका उदाहरण सिर्फ़ राजी हैं, राजी के अलावा शायद ही कोई अन्य हो | क्या कोई सर्जक व्यक्तित्व आत्म-अहं से इतना मुक्त रह सकता है ?"[१२]

राजी सेठ अपने निजी जीवन में घर को बड़ा महत्व देती हैं | "राजी सेठ ने अपने जीवन के बारह वर्ष अपनी गृहस्थी को साधने में इस प्रकार समर्पित किये कि परिवार उनकी आत्मीयता, वात्सल्य, कोमलता और शिष्ट संस्कारों से आह्लादित हो उठा, एक दूसरे के प्रति समरस हो उठा | उन्होंने परिवार में रह कर आनंद और अवसाद, आवेश और अनुग्रह, धीरज और सहिष्णुता सबको इस तरह जिया जैसे परिवार में रह कर जीवन को कहानी की तरह जी रही हों | राजी सेठ अपने निजी जीवन में एक ऐसे घर की संज्ञा में जीती हैं जिसमें रिश्तों और मैत्री दोनों की मिठास है, व्यवहार की नरमी है और विचार की आत्म-अर्जित एवं आत्म-अनुशासित आज़ादी है | वे न बँधती हैं, न बाँधती हैं, फिर भी अपने एकांत को सजग और सक्रिय रखती हैं |"[१३]

साहित्य सृजन :-

एकांतप्रिय राजी सेठ को बचपन से ही साहित्य पढ़ने का शौक था | साहित्यिक संस्कार उन पर बचपन से होते गए और साहित्य उनकी चेतना में बैठने लगा | उन्होंने नौ साल की उम्र में कविता लिखी थी | उनकी पहली कविता दैनिक 'मिलाप' के कालखंड में छपी थी | राजी सेठ की मेधा शक्ति और अध्ययन की प्रकृति ने उन्हें एक बार प्रेरित किया | उन्होंने गृहस्थी जीवन के पंद्रह वर्ष के बाद पढ़ाई शुरू करने का फ़ैसला लिया | उन्होंने अपने लिए साहित्यिक दिशा को अनुकूल पाकर 'हिंदी कहानी और अस्तित्ववाद' विषय का चयन शोध कार्य हेतु किया और उसे अहमदाबाद विश्वविद्यालय से पंजीकरणार्थ प्रस्तुत किया | उन्हीं दिनों अहमदाबाद में केंद्रीय हिंदी निदेशालय की ओर से एक अहिन्दी भाषी लेखक शिविर आयोजित किया गया था जिसमें श्री

विष्णु प्रभाकर कथा सत्र के संचालक के रूप में उपस्थित हुए | उसी शिविर में राजी सेठ की प्रविष्टि 'एक बड़ी घटना' शीर्षक कहानी के माध्यम से हुई जिसे दूसरी प्रविष्टियों की तुलना में श्रेष्ठ ठहराया गया | इसी बड़ी घटना ने राजी सेठ की दिशा सुनिश्चित कर दी और इनका कुल ध्यान रचनात्मकता की ओर खींच गया |

हिन्दी भाषी शिविर में ही राजी सेठ का परिचय डॉ.भोलाभाई पटेल से हो गया था | राजी सेठ ने अपनी प्रथम कहानी 'समांतर चलते हुए' उन्हें दिखाई | उन्होंने उसे अच्छी मानकर 'नया प्रतीक 'पत्रिका में भेज दिया | राजी सेठ की प्रथम प्रकाशित कहानी अज्ञेय द्वारा प्रकाशित 'नया प्रतीक' पत्रिका में अगस्त, १९७४ के अंक में 'समांतर चलते हुए' नामक शीर्षक से प्रकाशित हुई | 'समांतर चलते हुए' कहानी के प्रति शैलेश मटियानी विशेष रूप से आकृष्ट हुए थे | इसके बाद धर्मवीर भारतीजी की 'धर्मयुग' और श्रीपत रायजी की 'कहानी' पत्रिका में उनकी कहानी प्रकाशित होती गई | इस प्रकार एक अनवरत सिलसिला चलता रहा | राजी सेठ की गद्य रचनाएँ जल्दी प्रकाशित होती गयी | उन्हें काव्य प्रकाशन की ओर जाने का समय नहीं मिला | वे कविताएँ भी लिखती रही | इनकी चार दर्जन से भी अधिक कविताएँ अलग अलग अंकों में अज्ञेय, गिरिजाकुमार माथुर तथा डॉ.देवराज ने निरंतर प्रकाशित की |

प्रेरणास्त्रोत :-

राजी सेठ अपनी रचनाधर्मिता के लिए प्रेरणास्त्रोत किसी व्यक्ति, घटना या स्थिति को नहीं मानती | राजी सेठ मानती है कि हमारा संवेदनतंत्र जब हमें कलात्मक क्षमता की अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करता है तब रचना की निर्मिती होती है |

"कलात्मक क्षमता हर किसी के भीतर रसायन में निहित होती है, जो हमारे चुनाव के ठिकानों पर रोशनी डालती है | मेरे जैसे व्यक्ति के लिए, जो लेखन में अनायास,याकि स्थितिवश खिचता चला गया हो | यह प्रश्न उठाना कि उसकी शब्दों के संसार को ले कर क्या आकांक्षा थी या लेखन के जरिये उसने कौन से व्यक्तित्व की कल्पना की थी, ग़लत होगा | इतना भर आत्मचेत था मैं एकाग्र भाव से अपने लिखने को कायम लिख रख सकूँ | वही मुझे अपने से बड़ा विराट लग रहा था, जो मुझे डुबो सके |"[१४]

राजी सेठ का मानना है कि जैसे रेशम का कीड़ा अपनी ही लिसलिसाहट में से रेशम को जन्म देता है उसी तरह एक रचना के प्रकाशित होने का सुख दूसरी रचना के जन्म का कारण बनता जाता है | राजी सेठ की अपनी मानसिक क्षुधा ही प्रेरणास्त्रोत का कार्य कर रही थी | राजी सेठ का मानना है-"वह व्यग्र कातर, कच्चे-पक्के उत्साह से थरथराता हुआ आत्मरत दौर था,उस समय की प्रेरणाएँ स्वयंपोषी जैसी थीं | वहाँ अपने आत्मबल के अलावा और कौन साथी हो सकता है | अपने 'बीइंग' और 'निजता' को तलाशने के लिए ही तो ऐसे उपक्रम किये जाते हैं | मिले हुए रास्ते का आदर करना होता है,दूसरों के कंधों पर अपना क्षोभ या अपनी तुष्टि लादी नहीं जा सकती |"[१५]

साहित्यिक प्रभाव :-

राजी का स्वयं का मानना हैं कि "लेखकीय संस्कार हमें एक अच्छा पाठक होने से मिलता है |"[१६]वह बचपन से ही एक बुभुक्षित पाठक रही हैं | राजी सेठ में नए-नए विचारों तक पहुँचने की भूख सदा बनी रहती थी | इसलिए ढंग का जो उनके हाथ लगा वे पढ़ती

गई | शाहजहाँपुर की छोटी पुस्तकालय की लगभग सारी पुस्तके उन्होंने पढ़ डाली थी | राजी सेठ ने शरतचंद्र, गुरुवर टैगोर, जयशंकर प्रसाद और अज्ञेय आदि रचनाकारों की रचनाओं को अधिक पढ़ा और वे उन्हें बार-बार पढ़ती गई | जयशंकर प्रसाद के भाषा सौष्ठव, ओज, गहन अर्थवत्ता के अतिरिक्त राष्ट्र चिंतन व सांस्कृतिक प्रतिबद्धता के कारण उनके प्रति लगाव अधिक पनपा | राजीजी को अज्ञेय प्रसाद से भिन्न लगते थे, क्योंकि प्रसाद में एक शास्त्रीय प्रौढ़ता दिखाई पड़ती है जब कि अज्ञेय में स्वतंत्रता के सत्त्व का प्रसार | अज्ञेय के विषय में उनका मानना है कि -"उनकी रचनाएँ बेहद अछूते ढंग से अपनी रचना के भीतर उन अंतरालों की रचना करती थीं,जिस अंतरिक्ष में पाठक अपनी कल्पना का रचाव रचा सकता है और एक नए भाव बोध को जन्म दे सकता है | उनके रचना अंतराल सगर्भित हैं |"[१७]

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का गद्य सौष्ठव तथा गजानन माधव मुक्तिबोध की उत्कटता राजी सेठ के आकर्षण का केंद्र है | अन्य रचनाकारों को पढ़ने के विषय में इनका मानना है कि- "अपने रचना क्रम में लगने के कारण पढ़ने से रिश्ता बदलता जाता है | अपनी रचना मन के भीतर के 'स्पेस' घेर लेती है और ख़ाली दीखने वाला समय भी वस्तुत: ख़ाली नहीं होता | पढ़ने से रिश्ता छूटता जाता है और अपनी रचना के सरोकार भीतर घुलने लगते हैं |"[१८]

राजी सेठ के महिला लेखन के विषय में विचार :-

राजी सेठ ने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में महिला लेखन के विषय में अपने विचार व्यक्त किये है | वे महिला लेखन को अपनी पीड़ा में से गुज़रने का इतिहास मानती हैं | उसे पार किये

बिना अपनी दिशा और ध्येय का एहसास नहीं हो सकता | महिला लेखन की प्रगति के विषय में वे कहती हैं, "आत्मदया की सरहदें लांघ कर उनका लेखन मुख्यधारा के प्रश्नों से जूझ रहा है | एक वस्तुपरक पैमाने से उसका आकलन संभव होने लगा है | उसकी गुणवत्ता असंदिग्ध है |"[१९] वे इस पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण से सहमत नहीं है कि नारी की समस्याओं का साहित्यिक निदान नारी ही कर सकती है और नारी पात्रों के प्रति न्याय भी वही कर सकती है | ऐसा विचार कलात्मक पूर्णता के लिए संघर्ष करते लोगों की क्षमता व साहित्यिक सरोकार की ईमानदारी पर प्रश्नचिन्ह लगाना है |

एक अच्छा व सच्चा रचनाकार हर पात्र के विश्वसनीय चित्रण की क्षमता रखता है | "स्त्रियाँ पुरुष चरित्र भी रचती हैं और पुरुष लेखक नारी पात्रों का सृजन भी करते हैं | यह करना एकदम अनिवार्य भी है | इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि ऐसी सब रचनाएँ झूठी या अविश्वसनीय मानी जायेंगी | इतना तो वे अवश्य स्वीकार करती हैं कि स्त्रियों के लिखने लगने से अनुभव के बहुत से ऐसे नये क्षेत्र केंद्र में आ गये हैं, जो नारी अनुभव के दायरे में होने के कारण विशिष्ट हैं | उनका चित्रण भी स्त्री लेखकों ने निजता और अंतर्दृष्टि से किया है |"[२०]

जिस समाज को लक्षित कर सर्जक सृजन करता है,वह मध्यवर्गीय समाज है और उसी की नियति लेखकीय अंतर्द्वंद्वों का मुख्य आधार होती हैं | एक अंतर्द्वंद्व इस वर्ग के अपने भीतर भी है कि वह सदैव अपने से उच्चवर्ग में परिवर्तित हो जाने की कामना को मोह की सीमा तक पाल कर पीड़ित होता रहता है | और इस मोहात्मक कामना की उत्प्रेरक शक्ति घर की आर्थिक स्थिति है | ऐसे घरों में नारी की स्थिति के विषय में राजी सेठ का

मानना है कि- "एक परिवार में नारी की स्थिति प्रोन्नत हो जाती है जब वह आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त कर जाती है | उसकी आकांक्षाएँ व जीवन शैली बदल जाती है -ऊर्ध्वमुखी हो कर यह अर्थसत्ता स्त्री को घर-परिवार में कर्ता का सम्मान दिलाने में सहायक सिद्ध होती है |"[२१]

आज के दौर में स्त्री की अभिभूमिका इन्हीं सब परिवर्तनों के बीच सार्थकता पा रही है और उसकी समस्याओं का रंगरूप भी परिवर्तित हो रहा हैं | अर्थार्जन, शिक्षा स्तर व सजगता के आलोक में आज कुछ दूसरे ही प्रकार की समस्याएँ उजागर हो रही हैं जो स्त्री के घर के केन्द्र से विचलित होने के कारण उत्सृजित हुई हैं |

राजी सेठ के साहित्य एवं समाज के संदर्भ में विचार :-

राजी सेठ सरोकार स्वीकार करती हैं कि "साहित्य में हम जो कुछ भी रचते हैं वह सामाजिक संदर्भों से जुड़े ही तो होते है | सर्जक वह पात्र है जिसमें समाज का खाद्यान्न रचाया-पकाया जाता है | लिखते लिखते कुछ ऐसा मनोभाव बन जाता है कि हाथ में लिए पात्र, घटना या वस्तु (भले ही कितने कल्पित हों) समाज को प्रतिश्रुत होने लगते हैं और अनायास उनमें वैसे ही अर्थ की सृष्टि होने लगती है | मन में एक सामूहिक चेतना क्रियाशील होने लग जाती है कि लिखित एक भी शब्द समाजविमुख न हो जाये |"[२२] नयेपन के लोभ में वे समाज को उपेक्षित या अतिक्रमित नहीं करना चाहतीं | नये का प्रलोभन कहीं इतना न दबोच ले कि वह समाज के मानसिक आत्मिक स्वास्थ्य की चिंता से मुक्ति पा जाये | वे इन दोनों के बीच अन्योन्याश्रित संबंध (इंटिग्रिल रिश्ता) मानती हैं और अपनी कई कहानियों में उन्होंने ऐसी दुविधा को झेला भी है |

'क्यों लिखती हैं ?' इस प्रश्न के उत्तर में वे कहती हैं कि यह प्रश्न कठिन है जैसे कि अपने चेत-अचेत, प्रकट-अप्रकट,ज्ञात-अज्ञात का हिसाब देने को कह दिया गया हो, वह भी सर्वज्ञानी मुद्रा में | मुद्राओं को ओढ़ते-ओढ़ते, चीजों को खंगालते-खखोलते जीवन बीत जाता है पर सच क्या है, यह कहना साफ़ नहीं होता | यदि होता तो लिखने की निरंतरता चलती न रहती | सच नाम के झुनझुने को हाथ में थाम कर बैठा जा सकता | लिखना सब व्यक्तिगत सत्यों में सार्वभौमिक सत्य की खोज और इस जरिए हर कहीं मनुष्य में संचित मनुष्य के तत्त्वों तक पहुंचने की ललक है, ताकि एक इन्सान से दूसरे इन्सान, एक सदी से दूसरी सदी तक पहचान बनती चले | लेखन का कारण तड़प की अभिव्यक्ति है |

उनके शब्द हैं, "मैं लिखती हूँ,क्योंकि प्रवृत्तिगत रूप से मैं लिखने के अलावा उतना सहज कुछ और कर ही नहीं सकती | वहीं आ कर मेरा भीतर-बाहर का,साध्य-साधन का योग निकटतम सफलतम रूप में उद्घाटित होता है | वहीं आ कर मुझे सार्थकता की अनुभूति का भीतरी अहसास हाथ लगता है | लेखन का क्षेत्र ऐसा है कि कर्म से सफलता मिल जाये तो लेखक अपने आपको प्रतिभावान मान कर आत्मालोचना के पीड़क दबाव से बरी कर लेता है, जबकि जीवन में प्रतिभा और सफलता साथ साथ चलें, यह कोई ज़रुरी बात नहीं है | इस संयोग के प्रति यह संसार बड़ा ही कृपण और कठोर है |"[२३]

राजी सेठ अपने लेखन के प्रथम चरण को निरर्थकता बोध और उत्तर चरण को सार्थकता बोध शीर्षक दे कर व्याख्यायित करती हैं | उन्हें लेखन को ले कर 'मात्र प्रतिभा' का गुमान बेमानी लगता है,क्योंकि रचने की अन्विति तक पहुंचने में कितनी ही

चीज़ों का योग है- इच्छा, कल्पना, मानसिकता, सम्मान, समय, निवृत्ति, स्वास्थ्य, स्वातंत्र्य भाव बल्कि इससे भी अधिक कितनी ही अन्य बातें | वैसे भी हमारे देश में नारी का आधा समय रसोई व पाक परोस में खप जाता है | लेखन के पीछे अपने अस्तित्व का विचार भी है | सब प्रकार के सुखों के होते हुए जब जीवन अवसादाच्छन्न बना रहे तो सोचना पड़ता है | उन अदृश्य आंतरिक ज़रूरतों पर ध्यान जाता है जो इन वस्तुओं की स्थूल दृश्यमानता से इतर है | यही लिखने को प्रेरित करता आया है |

राजी सेठ के पत्र-पत्रिकाओं के विषय में विचार:-

पत्र-पत्रिकाओं के विषय में राजी सेठ के विचार हैं कि "इनके माध्यम से सर्जक व आलोचक व्यक्त तो होता ही है,साथ ही साथ वह समकालिक चिंताओं और रचनाधर्मियों की रचना-यात्रा भी व्यक्त होती है जो उसके लिए दिशा निर्धारित करती है |"[२४] वैसे भी मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सर्जक को पत्रिका तक अपनी पहुँच सुगम लगती है | इस दिशा में नये हस्ताक्षर तो भरपूर लाभान्वित होते हैं | पत्रिकाओं में आयी रचनाओं पर प्रतिक्रियाएँ भी तुरंत मिल जाती हैं, जिससे वस्तुपरकता का मूल्य पुष्ट होता है | बड़े से बड़ा लेखक भी पत्रिकाओं के ही माध्यम से अपनी यात्रा प्रारंभ करता है और साहित्यिक पहचान बनाता है |

राजी सेठ के दृश्य-श्रव्य माध्यम के विषय में विचार:-

दृश्य-श्रव्य माध्यम के साहित्य पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में उनके विचार है-"दृश्य-श्रव्य माध्यम साहित्य जैसी एकाग्र और गंभीर दीक्षा के सामने एक मनोरंजक,प्रलोभक,आकर्षक, गतिमान, स्व नियंत्रित संसार प्रस्तुत करते हैं | यह बहुत बड़ा लालच है | ऐसे में रचनाकार के मन में जब तक लेखन के प्रति संकल्प और

निष्ठा दृढ़ न हो, समय और एकाग्रता का नुकसान होता है और पाठक छिनते हैं | कई ऐसे भावी लेखक भी छिनते हैं जो अपने समय का रचनात्मक उपयोग करने के लिए तैयार हो रहे होते हैं | इन माध्यमों का सबसे बड़ा नुकसान तो रचनात्मक अवकाश को ही ध्वस्त करना |"[२५] इसी बात को वे दूसरे रूप में भी स्वीकार करती हैं- "रुचियों और रूझानों की दुविधा के कारण जो लोग हाशिये पर खड़े हैं वे दृश्य-श्रव्य माध्यमों को समर्पण कर देते हैं | जिससे साहित्य में प्रविष्ट हो जाने वाले एक प्रकार के अधकचरेपन से मुक्ति मिल जाती है और संदिग्ध निष्ठा का आक्रमण बच जाता है | वैसे इन माध्यमों के आपसी प्रभाव से साहित्य में गत्वरता बढ़ती है और साहित्य लोकजन के निकट आने की मंशा से अभिहित रहता है |"[२६]

कथा साहित्य का इलेक्ट्रानिक मीडिया से जो संबंध है उसे राजीजी स्वीकार करते हुए कहती है- "कथा साहित्य इन माध्यमों के लिए एक तरह का 'सोर्स मैटीरियल' है | अन्य विधाओं की अपेक्षा कथा साहित्य से इनका रिश्ता ज़्यादा सीधा और परस्पराश्रयी है | टी.वी.में दिखाये जाते सीरियलों का आधार कथा साहित्य ही होता है | आयोजकों के पास जब कल्पना के गिने चुने प्रारूप चुक जाते हैं, तो वे कथा तत्त्व की अचूक प्रामाणिकता पर ध्यान देते हैं | एकल रचना एक 'टीमवर्क' के हवाले हो जाती है, वह दूसरी बात है |"[२७]

राजी सेठ की हिंदी कहानी की वर्तमान स्थिति पर राय:-

हिंदी कहानी की वर्तमान स्थिति पर राय व्यक्त करते हुए राजीजी को इसकी स्थिति निराशाजनक नहीं लगती,"वह कहानीकार के सचेत संवेदनतंत्र की गवाही देती है, पर यह सब कुछ कहानी

की विधागत मांगों को भी पूरा कर पा रहा हो,ऐसा नहीं लग रहा | प्रश्न उठाया जाता है कि कथ्य की प्रमुखता को ध्यान में रख कर विधागत शर्तों को भी लचीला क्यों न माना जाये, पर प्रभाव की समग्रता के लिए तथा साहित्यिक विधा के अपने विकास के लिए यह बात उपेक्षणीय नहीं है | समकालीन स्थिति पर प्रतिक्रिया तो अच्छे-बुरे लेखक, पत्रकार और अखबार भी करते हैं,पर जिस आकलन से गहरे और दूरगामी प्रभाव की सृष्टि होती है या परिष्कृति का विस्तार होता है,वह उसी रचना से उपलब्ध हो सकता है जो कथ्य, शिल्प, भाषा में संतुलन साध सके और जीवन और अनुभव के अव्यक्त आयामों को भी समाविष्ट कर सके |"[२८]

राजी सेठ का कृतित्व:-

राजी सेठ ने सन् १९७५ से लिखना प्रारंभ किया है | उन्होंने लेखन का प्रारंभ देर से किया,परन्तु तब से आज तक वे लेखन कार्य में निरंतर रत है | उनका प्रकाशित साहित्य निम्न प्रकार से है-

कहानी साहित्य :-

राजी सेठ ने कुल मिलकर छ: कहानी संग्रह लिखे है ,जो निम्नलिखित है :-

(१) अन्धे मोड़ से आगे : १९७९: राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली |

(२) तीसरी हथेली :१९८१: राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली |

(३) यात्रा-मुक्त :१९८७: नेशनल पब्लिशिंग हाऊस,नई दिल्ली |

(४) दूसरे देशकाल में :१९९२:नेशनल पब्लिशिंग हाऊस,नई दिल्ली |

(५) यह कहानी नहीं : १९९८: भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,नई दिल्ली |

(६) ग़मे-हयात ने मारा : २००६ : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,नई दिल्ली |

इसके अलावा राजी सेठ के कहानियों के कुछ संचयन प्रकाशित हुए है |

(१) सदियों से : १९९६ : वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर |

(२) किसका इतिहास :२००२ : इंदप्रस्थ प्रकाशन, नई दिल्ली |

(३) यहीं तक : २०१० : भावना प्रकाशन, नई दिल्ली |

(४) खाली लिफ़ाफ़ा : २००७: पेंगुइन बुक्स इंडिया, नई दिल्ली |

(५) मार्था का देश : २००९: पेंगुइन बुक्स इंडिया, नई दिल्ली |

इन संचयन में उपर्युक्त छ: कहानी संग्रह में से चुनी हुई कुछ कहानियाँ सम्मिलित है |

उपन्यास :-

राजीजी ने निम्नलिखित उपन्यास लिखे :-

(१) तत-सम : १९८३ : राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली

(२) निष्कवच : १९९५ : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,नई दिल्ली |

अनुवाद कार्य :-

राजी सेठ ने निम्नलिखित कृतियों का अनुवाद किया है -

(१) पत्र युवा कवि के नाम : जर्मन कवि रिल्के के पत्रों का अनुवाद : १९९४ : नेशनल पब्लिशिंग हाऊस,नई दिल्ली |

(२) रिल्के के प्रतिनिधि पत्र : १९९९ : साहित्य अकादमी, नई दिल्ली |

(३) पल्लवी परणी गई : १९६३: दिनेश शुक्ल के त्रिअंकी नाटक का गुजराती से हिंदी अनुवाद |

अनुवादित कृतियाँ:-

१.मेरे लई मई-पंजाबी कहानी संग्रह: १९८५ :पंजाबी राइटर्स को.आ.सा., नई दिल्ली

२.मिलों लंबा पुल-ऊर्दू कहानी संग्रह :१९९८ :ऊर्दू अकादमी, नई दिल्ली

३.अगंस्ट माइसेल्फ एंड अदर स्टोरीज: १९९३: रूपा एण्ड कंपनी प्रा.चेन्नई

समीक्षा:-

१.डॉ.देवराज-एक अध्ययन साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

विविध:-

ऑक्ताविया पाज (अंग्रेजी से काव्यानुवाद)

सुरेश दलाल (गुजराती से काव्यानुवाद)

लक्ष्मी कण्णन (अंग्रेजी से काव्यानुवाद) (मूल तमिल)

जोगेंद्र पाल (उर्दू लघु कथाएँ)

संपादन:-

साहित्यिक पत्रिका 'युगसाक्षी' लखनऊ का १९८७ से आठ वर्ष तक संपादन |

भारतीय कहानियाँ (१९८७-८८) भारतीय ज्ञानपीठ के लिए संपादन |

अन्य:-

विविध संगोष्टियाँ में प्रपात्रों की प्रस्तुति |

उपलब्धियाँ:-

१.फेलो,भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला १९९६-९७

२.मनोनीत सदस्य, जनरल कौंसिल साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

३.मनोनीत सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति, हिंदी निदेशालय, दिल्ली

४.कार्यकारी समिति, हिंदी अकादमी (१९९३-८३)

सम्मान पुरस्कार:-

राजी सेठ को हिंदी साहित्य में अपने अद्वितीय योगदान हेतु अनेक पुरस्कार से सम्मानित किया गया है | उन्हें निम्नांकित पुरस्कार प्राप्त हुए है :

(१) कथा साहित्य ' रचना' पुरस्कार : १९८५

(२) 'तत-सम' पर भारतीय भाषा परिषद पुरस्कार : १९८५

(३) विशेष योगदान के लिए हिंदी अकादमी सम्मान पुरस्कार : १९९८६-८७

(४) 'यात्रा-मुक्त' पर केन्द्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा हिंदीतर भाषी लेखकीय पुरस्कार : १९८७-८८

(५) दिल्ली कर्नाटक संघ द्वारा हिंदी प्रतिनिधि सम्मान: १९९१

(६) अनंत गोपाल शेवड़े हिंदी कथा साहित्य पुरस्कार : १९९३

(७) वाग्मणि सम्मान: राजस्थान-२००१

सदस्यता:-

१.मनोनीत सदस्य, जनरल कौंसिल, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

२.मनोनीत सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति, केंद्रीय निदेशालय, नई दिल्ली

३.फैलो ,भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला-१७१००५

४.आजीवन सदस्य पेन (P.E.N.) इंटरनेशनल

५.सदस्य, आर्थस गिल्ड ऑफ़ इंडिया, नई दिल्ली

६.सदस्य,इंडियन सोसायटी ऑफ़ ऑथर्स, नई दिल्ली

७.सदस्य पोयट्री सोसायटी ऑफ़ इंडिया, नई दिल्ली

८.आजीवन सदस्य भारतीय साहित्य परिषद, अहमदाबाद

भावी योजनायें:-

उपर्युक्त प्रकाशनों के बाद राजी सेठ के समीक्षा लेखों, सामायिक लेखों तथा कविता की पुस्तकें निकट भविष्य में पाठकों के समक्ष होगी | उनका एक लघु उपन्यास भी प्रक्रिया में है | एक बड़ा उपन्यास भी आप लिख रही हैं |

राजी सेठ के उपन्यास:-

राजी सेठ ने दो उपन्यासों की रचना की है :

- तत-सम
- निष्कवच

प्रस्तुत अध्याय में राजी सेठ के उपन्यासों का अध्ययन किया गया है |

तत-सम :-

'तत-सम' राजी सेठ की प्रथम औपन्यासिक कृति है | जो १९८३ में प्रकाशित हुई | 'तत-सम' उपन्यास पिछले साठ वर्ष की कालजयी कृतियों में चुना गया है | प्रस्तुत उपन्यास में राजी सेठ ने सामाजिक परिवेश में एक उच्च शिक्षा प्राप्त, विश्वविविद्यालय में अध्यापिका के रूप में कार्य करने वाली विधवा युवती की मानसिकता तथा जीवन में पुनः स्थापित होने का प्रयत्न करती, परिवेशगत संस्कारों और अपनी मानसिकता से जूझती स्त्री का चित्रण किया है |

निष्कवच :-

'निष्कवच' राजी सेठ का दूसरा उपन्यास है | 'निष्कवच' उपन्यास १९९५ में भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित हुआ | 'निष्कवच' उपन्यास का अंग्रेजी अनुवाद भी हुआ है | जिसे मैकमिलन इंडिया

प्रा.लि.चेन्नई द्वारा'अनार्म्ड' नाम से छापा जा चुका है | 'निष्कवच' उपन्यास का पहला वृत्तांत एक उपन्यासिका के रूप में सितम्बर १९८९ में 'सारिका' में 'गणित ज्ञान' के नाम से छापा था | दूसरे वृत्तांत की प्रेरणा राजी सेठ को अपने ही बेटे से मिली हैं | उसे पत्र लिखने बैठी तो अठारह फुलस्केप पेज का यह वृत्तांत रच डाला | 'निष्कवच' उपन्यास में दो वृत्तांत हैं | 'निष्कवच' दो वृत्तांत से बनी एक मार्मिक कथा है | 'निष्कवच' उपन्यास के दोनों वृत्तांत एक-दूसरे से अलग हैं | दोनों के कथा नायक युवा है | इस उपन्यास में मूल्यों की डगमगाहट में अपने मूल से उखड़ी युवा पीढ़ी की मानसिकता उभरती है |

तत-सम उपन्यास की कथावस्तु :-

राजी सेठ द्वारा लिखित 'तत-सम' उपन्यास विधवा पुनर्विवाह को अंकित करने वाला उपन्यास है | उपन्यास में विधवा नायिका वसुधा की मानसिकता का बड़ी सूक्ष्मता के साथ चित्रण किया है | डॉ.उषा यादव के अनुसार "राजी सेठ का तत-सम भारतीय विधवा की उस मानसिकता को लेकर लिखा गया है ,जिसमें वह अपने को संसार का अभागा प्राणी मानती है और पुनर्विवाह करके अपने जीवन के दुःख को सूख में बदलने के लिए बड़ी मुश्किल से तैयार होती है |"[२९]

'तत-सम' उपन्यास की नायिका वसुधा विधवा है | पुरुष पात्र विवेक और आनंद जो विभिन्न परिस्थितियों में अपनी अपनी पीड़ा लिए हुए है | इस उपन्यास में दो पात्रों की समानांतर जीवनयात्रा जो अपनी-अपनी, अलग-अलग स्थितियों में बंधे रहकर भी जिजीविषा के मर्म को टटोलते दिखाई देते है | वसुधा इन दो पुरुष

पात्रों के इर्द-गिर्द घूमती है | इसमें पहला पात्र विवेक है, जो किसी अपराध ग्रंथी का शिकार है और पात्र आनंद भी पीड़ा और व्यथा की अनुभूतियाँ ले गुजरा है, लेकिन वह वसुधा के साथ अनुभूतियों की स्मृति के बजाय वर्तमान में जीना चाहता है |

वसुधा लखनऊ युनिवर्सिटी में समाजशास्त्र की अध्यापिका के रूप में कार्य कर रही है | वसुधा के पति निखिल की कार दुर्घटना में मृत्यु हो गई है | वह अपने भाई-भाभी के साथ लखनऊ में रहती है | निखिल की अकाल मृत्यु के बाद उसका हरा-भरा संसार उजड़ जाता है और उसके सामने संघर्ष की स्थितियाँ निर्माण होती है | वसुधा निखिल की यादों को भूला नहीं पाती | वसुधा के भाई-भाभी वसुधा का पुनर्विवाह करवाना चाहते है | वसुधा के भाई शरत को अपनी बहन की चिंता लगी रहती है | इसी वजह से वह वसुधा का पुनर्विवाह करने के लिए उतावला है | वसुधा का पुनर्विवाह करवा के वह अपनी बहन के दिल में से निखिल की यादों को निकालना चाहता है | वह वसुधा को नये जीवन की शुरुआत के लिए मानसिक रूप से तैयार करते हैं | वह वसुधा को रुढ़ियों की परवाह न करने की शिक्षा देते हुए कहते है-"जूता टूट गया दूसरा ले आओ | घड़ी बिगड़ गयी दूसरी खरीद लो | कपड़ा फट गया,दूसरा सिलवा लो और यह जीती-जागती जिंदगी ? अरे ! सारे कायदे-कानून,सारी रोक-टोक जिंदगी को डुबोने के ही लिए है...."[३०]किन्तु वसुधा पुनर्विवाह करने के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं है | वसुधा के लिए अपने पूर्व पति निखिल की स्मृतियों से अपने को पूरी तरह से काटकर किसी ओर से जुड़ना गहरी मानसिक बैचेनी और संघर्ष का प्रश्न है | वसुधा निखिल के साथ बिताए क्षणों की यादों के सहारे सारा जीवन व्यतीत करना चाहती

है | अपने भाई के मुँह से पुनर्विवाह की बात सुनते ही वसुधा को ऐसा महसूस होता है जैसे-"माथे पर सिंदूर की तरह पोंछ डालना चाहते है निखिल के साथ जुड़ा जीवनखंड | जैसे कि पेंसिल से लिखी गई थी वह सारी इबारत रबर लिया और मिटा दिया |"[३१]

एक बार वसुधा युथ फेस्टीवल के सिलसिले में अपने सहयोगी डॉ.ललितचन्द्र और विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करने वाली छात्राओं के साथ दिल्ली आती है | दिल्ली में उसकी मुलाकात प्राध्यापक विवेक से होती है | वसुधा विवेक के प्रति आकर्षण महसूस करती है | वसुधा और विवेक इस मुलाकात में अपने जीवन की कुछ पर्ते एक-दूसरे के सामने खोलते हैं | विवेक की प्रेमिका का नाम शिरीन था | वह आर्थिक प्रश्नों के चलते शिरीन से विवाह नहीं कर पाता | शिरीन गर्भवती हो जाती है | विवाह न कर पाने की विवशता के कारण शिरीन को गर्भपात करना पड़ता है,उसी दौरान उसकी मृत्यु हो जाती है | विवेक अपनी प्रेमिका शिरीन के बारे में बात करने लगता है तब वह भावुक हो उठता है और कहता है-"शिरीन की मृत्यु को सात साल हो चुके हैं...पर वह मेरे लिए कभी पुरानी नहीं पड़ती...नहीं पड़ेगी |"[३२] उसे आज भी शिरीन का आभास होता है | वह आज भी उसी के प्रेम में जी रहा है | विवेक शिरीन की मृत्यु का जिम्मेदार खुद को मानता है | इस अपराध बोध से ग्रस्त प्रायश्चित के रूप में विवेक वसुधा से शादी नहीं करना चाहता |

दिल्ली में वसुधा अपना अधिक समय विवेक के साथ बिताती है | वसुधा को लगता है कि विवेक से उसे संरक्षण मिल सकता है, किन्तु वसुधा अपने मन की बात विवेक से कह नहीं पाती | अपने अंदर हुए इस परिवर्तन से वसुधा स्वयं चकित है |

वसुधा दिल्ली से घर वापस लौट आती है | वसुधा घर आकर देखती है कि शरत भैया ने उसके पुनर्विवाह का विज्ञापन भी दे दिया है | विज्ञापन के उत्तर में अनेक प्रत्याशी वसुधा से विवाह करने की इच्छा प्रकट करते हैं और उसे देखने या खुद को दिखाने-सुनाने के उद्देश्य से उसके घर आते हैं | वसुधा सभी प्रक्रिया को अग्नि परीक्षा के रूप में झेलती है | एक बार श्रीमान इंटिलेक्चुअल वसुधा के साथ शादी करने का प्रस्ताव लेकर आता है | श्रीमान इंटिलेक्चुअल की हरकतें वसुधा को बेशर्म लगती है | श्रीमान इंटिलेक्चुअल की बेशर्म हरकतें देख वसुधा उसके साथ शादी करने से इनकार कर देती है | वसुधा के इनकार से भैया-भाभी क्षुब्ध हो जाते है | भाभी उत्तेजित होकर कहती है-"गुण-अवगुण रहने दो तुम...कौन....दूध का धुला मिल जाता है इस उम्र में | कुछ अपनी खोट कुछ दूसरे की लाचारी इसीलिए बात बन भी जाती है नहीं... तो.... "[३३]

वसुधा विवेक से अपने मन की बात कह देना चाहती है | वसुधा एक बार फिर से सेमिनार के सिलसिले में दिल्ली आती है | विवेक को जैसे ही वसुधा के दिल्ली आने की खबर मिलती है, वह उसे मिलने चला आता है | विवेक भी वसुधा की ओर आकर्षित होकर उसे कहता है-"कल आपको घर ले जाना चाहता हूँ-अपने घर |"[३४]वसुधा के दिल में एक उम्मीद जाग जाती है | किन्तु दूसरे दिन वह वसुधा को लेने नहीं आता | वह अपने अतीत के दुःख में इतना लिपटा हुआ है कि किसी भी स्थिति में उससे बाहर निकलना नहीं चाहता | वह एक ओर वसुधा को चाहने लगा था, तो दूसरी ओर शिरीन की यादों को दिल से निकाल नहीं पा रहा था | विवेक की अतीत के प्रति जो आसक्ति थी, वह उसकी भविष्य की

सारी संभावनाओं को अवरुद्ध करने लगी थी | शिरीन के प्रति इस प्रेम की वजह से ही वह वसुधा के पास जाकर भी उसके पास पहूँच नहीं पाता है | वसुधा उसकी राह देखती है | उसके घर भी जाती है, किन्तु विवेक उसे घर पर नहीं मिलता | विवेक वसुधा को मिलने नहीं आता | वह उसके लिए एक लिफ़ाफ़ा भेजता है | उस लिफ़ाफ़े में एक पर्ची थी, उसमें लिखा था "फॉरगेट इट | सब कुछ भूल जाओ |"[३५] विवेक वसुधा को सब कुछ भूल जाने की सलाह देता है | विवेक अपना वादा भूल जाता है | वसुधा विवेक के इस व्यवहार से हताश हो जाती है | वह निराश होकर लखनऊ लौट आती है | वसुधा के मन में कुछ तो ऐसा था जिसका समापन नहीं हो रहा था | वह इन सारी बातों को भूलाना चाहती थी | इसी कारणवश वह दक्षिण भारत की यात्रा पर निकल पड़ती है |

दक्षिण भारत की यात्रा के दौरान वह बीमार पड़ती है | उसी समय उसे आनंद मिलता है | आनंद बीमारी में वसुधा की सेवा करता है | उसके साथ रहता है | आनंद अतीत को भूलकर वर्तमान में जीने वाला था | वह अविवाहित था | वह वसुधा को निम्मी और जेनी के बारे में सब कुछ बता देता है | आनंद अपनी भावनाओं को खुलकर व्यक्त करने वाला व्यक्ति था | वह अपनी आक्रांत मानसिकता में भी बेहद सहज और मुक्त है | वसुधा भी आनंद को अपने अतीत के बारे में सब कुछ बता देती है | वह विवेक के बारे में भी आनंद को बताती है | वसुधा आनंद की जीवन की तरफ देखने की दृष्टि को देखकर उससे शादी करने का मन बना लेती है | वह आनंद को जीवनसाथी के रूप में चुनने के लिए मानसिक रूप से तैयार हो जाती है |

दक्षिण भारत की यात्रा से लौटने के पश्चात वसुधा को द्वंद्वात्मक स्थिति का सामना करना पड़ता है | घर पहुँचते ही वसुधा को विवेक के तीन पत्र मिलते है | उन पत्रों में विवेक ने वसुधा से विवाह करने की इच्छा प्रकट की थी | वसुधा दुविधा में फँस जाती है | वह इस स्थिति से बाहर निकलने के लिए आनंद का सहारा लेती है | आनंद भी वसुधा को एक दोस्त की तरह सहायता करता है | अंत में वसुधा आनंद के पक्ष में निर्णय लेती है | आनंद का चुनाव करके वसुधा अपने अनुरूप साथी चुनती है |

'तत-सम' को राजी सेठ ने दो भागों में विभाजित किया है- पूर्वार्ध और उत्तरार्ध | इन्हें कथा-विकास की दो स्थितियाँ भी माना जा सकता है | वसुधा के द्वारा लेखिका ने समकालीन परिवेश में नारी के प्रति समाज के विभिन्न रूपों और उसकी विभिन्न स्थितियों का प्रभावी अंकन किया है | राजी सेठ ने 'तत-सम' उपन्यास में तीनों ही प्रमुख पात्रों के मन का विश्लेषण करने में विशेष प्रतिभा का परिचय दिया है |

तत-सम का कथ्य :-

राजी सेठ का 'तत-सम' एक ऐसा उपन्यास है-"जो अपने समकाल की प्रचलित धारा से पृथक है | वह न यथार्थ की तथाकथित प्रगतिशीलता की व्यथा की कथा है और न कथा से ऐसा पलायन की कथा किसी शून्य में तिरोहित हो जाए |"[३६]राजी सेठ ने 'तत-सम' की रचना अपने विचारों के प्रतिपादन के लिए की है | 'तत-सम' में अतीत के रंग में भी मनोवैज्ञानिक विचारधारा को परखा है |

'तत-सम' उपन्यास आध्यात्मिक या दार्शनिक प्रश्नों से नहीं जूझता, यद्यपि दर्शन की गहराइयों में जाने के लिए जिस पैनी अन्तर्दृष्टि की जरूरत होती है | उसके दर्शन राजी सेठ की रचना की वैचारिक बारिकियों में निश्चय ही होते है | 'तत-सम' उपन्यास जीवन के राजनैतिक, आर्थिक या व्यावहारिक समस्याओं से बहुत दूर रहकर जिजीविषा के मूल स्त्रोत के स्वरूप और उसके चेतन्य की परख के प्रश्न को उभारता है | 'तत-सम' उपन्यास जिजीविषा का आविष्कार है | जिजीविषा अर्थात जीवनशक्ति या जीवनेच्छा | 'तत-सम' का केन्द्रिय विचार है जीवन का स्वीकार हर हाल, हर सूरत में जीवन का स्वीकार "यदि जिजीविषा का सहारा मिल जाये तो आशा की पारस किरणों के स्पर्श से अंर्तआत्मा जगमगा उठती है और मनुष्य दुःख तथा हताशा के गहन अंधकार से मुक्ति पा लेता है तथा स्वत: जीवन प्रकाश की ओर खिंचा चला जाता है |"[३७] 'तत-सम' में राजी सेठ ने इसी जिजीविषा की महत्ता को दर्शाया है |

'तत-सम' उपन्यास के पात्र वसुधा, विवेक और आनंद के चरित्रों को जिजीविषा के थीम के संदर्भ में देखें तो तीनों की जीवन-स्थितियाँ समान है | लेकिन तीनों का उससे निपटने का तरिका बिल्कुल अलग है | तीव्र अपराधबोध से ग्रस्त विवेक आत्मदया से ऊबर नहीं पाता | वसुधा जूझती है, गिरती है, आहत होती है, पर थककर बैठ नहीं जाती | विधवा वसुधा का विवेक व अन्य पुरुष से संबंध, परिचय, द्वंद्वमयी स्थितियों और आनंद नामधारी व्यक्ति पात्र से विवाह केवल एक सामाजिक वैयक्तिक घटना मात्र नहीं है | प्रभा सक्सेना के शब्दों में"तत-सम में नायिका वसुधा प्रतीक है उस प्रबल जिजीविषा का,उस ललक का जो मनुष्य

के भीतर बार-बार सहने और नये सिरे से जीवन का विकल्प ढूँढने के लिए प्रेरित करती है | यह प्रतीकात्मकता उपन्यास में एकदम स्पष्ट है...चेष्टा को आप पा गये हैं, तो उस ललक को भी आप पा जायेंगे | जिसका नाम 'वसुधा' हो सकता था पर वसुधा ही नहीं | उद्‌गम से झूमता प्रवाह अरोक बेहता है, किनारे पर बसते लोग धरती को छू सकने वाली जल धारा का जो कोई भी नामकरण करें....सोच कर देखिए यह 'वसुधा' कुछ समय पहले की 'अनिच्छा' ही तो थी, कुछ समय पहले का अस्वीकार,कुछ समय पहले की एक बेध्यान उपस्थिति | जो चीज इस अनिच्छा को इच्छा में परिणत करती है | वह क्या वसुधा हैं |"[३८]

वसुधा 'इच्छा' है | वसुधा उसके विपरीत जो कुछ है नकारती है, किन्तु वह अपने योग्य जीवन साथी व जीवनस्थिती को पाकर भी एकाकी हो जाती है | आनंद के रूप में उसे वह जीवनस्थिती व जीवनसाथी प्राप्त होता है, जिसके सामने वह पूरी तरह समर्पित हो जाती है | 'विवेक' उन ठहरी हुई स्थितियों का प्रतीक है,जो समय व परिस्थिती के गतिवान चक्र के भीतर की अनिवार्यताओं को नहीं समझ पाते | 'वसुधा' विवेक के भीतर जो मकड़ी के जाले की तरह बनी हुई मिथ्या धारणायें थी, उसे मिटा देती है | इस तरह तीनों पात्र परस्पर भावलोक व मानसिक लोक के पूरक पात्र व जीवन स्थितियाँ है | इसीलिए 'तत-सम' के पात्रों को विधवा विवाह,जीवन के भटकाव व अन्य सामाजिक,वैयक्तिक समस्याओं तक स्थूल रूप में सीमित करके नहीं देखा जा सकता | आनंद वसुधा को अपना पुरुषत्व अर्पित कर नारी-पुरुष को समान मानकर परिवर्तित करता है |

'तत-सम' उपन्यास में 'बौद्धिकता' आंतरिक गठन की मज़बूरी है | वसुधा इसके आवरण से ठगी हुई, असहज नारी नहीं है | उसका उस परिस्थिति में ही सोचना विचारना महत्त्वपूर्ण है | राजी सेठ ने नायिका वसुधा को चिंतन-मनन के साथ प्रस्तुत किया है | "वसुधा ही एक ऐसी नारी पात्र है,जिसके सामने कुछ पुरुषों का व्यक्तित्व व बौद्धिकता छोटी दिखाई देने लगती है |"[३९] 'तत-सम' में राजी सेठ ने स्वतंत्र्य व मुक्ति के प्रश्नों को भी उठाया है | "जिस समाज में पुरुष सही अर्थ में मुक्त और स्वतंत्र है, उस समाज में नारी भी स्वत: मुक्ति व स्वतंत्रता के एहसास को प्राप्त कर लेती है |"[४०]'तत-सम' में वसुधा की स्थिति कुछ विपरीत दिखायी देती है | वह विवेक के संपर्क में आकर स्वतंत्र व मुक्त नहीं हो पाती किन्तु आनंद के संपर्क में आकर स्वतंत्र व मुक्त मन:स्थिती को पा लेती है |

राजी सेठ के 'तत-सम' उपन्यास में दार्शनिक,बौद्धिक, आंतरिक जिजीविषा का बड़ी कुशलतापूर्वक प्रचार भी है | राजी सेठ का यह उपन्यास मनोवैज्ञानिक उपन्यास भी है | राजी सेठ पात्रों के अंतर्जगत का चित्रण करने में कुशल है | इसमें राजी सेठ ने वसुधा, विवेक के आंतरिक द्वंद्व का चित्रण भी किया है |

'तत-सम' एक संस्कृत शब्द है,जिसका अर्थ है, 'उसके समान' | 'तत-सम' उपन्यास की नायिका वसुधा स्वयं के समान जो है, उसे जीवनसाथी के रूप में ढूँढती है | विधवा वसुधा वर का वरण अपने ही विवेक की कसौटी पर करती है | डॉ.रमेश दवे जी कहते हैं-"प्रेम जब समर्पण चाहता है, तो अतीत की स्मृतियों का तर्क बेमानी है | जिस वर्तमान में प्रेम जन्मा है, उसी में उसका समर्पण आवश्यक है | स्मृति और अतीत की जकड़न से मुक्त हुए बिना

प्रेम भी मुक्त नहीं हो सकता | वसुधा अतीत की जकड़न में बंध विवेक के प्रेम को नहीं बल्कि वर्तमान में जीनेवाले आनंद के प्रेम को स्वीकारती है | आनंद वसुधा के जीवन का भौतिक आनंद मनुष्य के रूप में भी है और मानसिक आनंद उस मनोभाव के रूप में भी, जिसमें एक स्त्री पुरुष के सान्निध्य को उपलब्ध करके पुरुष को भी पूर्ण करती है और स्वयं भी पूर्ण होती है |"[४१]

तत-सम के पात्र :-

राजी सेठ का 'तत-सम'उपन्यास सामाजिक उपन्यास है | इस उपन्यास में पात्रों में पर्याप्त विविधता है | 'तत-सम' उपन्यास में मनोवैज्ञानिकता का भी चित्रण सूक्ष्मता के साथ किया गया है | 'तत-सम' के पात्र संरचना का मूल्यांकन करते समय हमें इस बात को विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए कि यह एक सामाजिक-मनोवैज्ञानिक उपन्यास है और इसमें सामाजिक पृष्ठभूमि पर व्यक्ति का यथार्थवादी चित्रण है | 'तत-सम' उपन्यास में प्रमुख तीन पात्र है | नायिका 'वसुधा चौधरी' और विवेक और आनंद यह दो प्रमुख पुरुष पात्र है | 'तत-सम' उपन्यास के यह पात्र काल्पनिक न होकर वास्तविक जान पड़ते है | "राजी सेठ का उपन्यास वर्तमान भारतीय समाज में एक उच्च मध्यवर्गीय विधवा के जीवन और उसके पुनर्विवाह के प्रश्न पर आधारित है | जिसमें एक तरफ नारी अंतर्मन के रेशों-रेशों को अलग करके उसके प्रौढ़ भावों को सामने लाने का यत्न है, तो दूसरी ओर उससे जुड़े प्रश्नों की सार्थक बहस का प्रयास है |"[४२]

'तत-सम' उपन्यास में दो प्रकार के पात्र है | उपन्यास की नायिका वसुधा और पुरुष पात्र विवेक और आनंद लेखिका की विचारधारा के प्रतिनिधि पात्र है तो माँ,शरद भैया,भाभी,रुथ,कल्पना,

डॉ.ललितचन्द्र,सुधीर आदि वे पात्र है,जो इतर पक्ष में सहयोग देते है | 'तत-सम' उपन्यास के सारे पात्र भाववाचक हैं, दुःख से मुक्ति के प्रयास में पूरा उपन्यास लिखा गया है | पर बाँध नहीं पाता |"[४३] "इस उपन्यास में पात्रों का चरित्र-चित्रण स्वाभाविक है |"[४४]

'तत-सम' के प्रतिनिधि पात्र:-

वसुधा चौधरी :-

राजी सेठ के 'तत-सम' उपन्यास की प्रमुख नायिका वसुधा चौधरी है | वसुधा अत्यंत संवेदनशील,चुप्पी किस्म की युवती है | डॉ.एम.वेंकटेश्वर का कहना है-"वसुधा समग्र उपन्यास पर महादेवी वर्मा की नीर भरी दुःख की बदली-सी छाई हुई है |"[४४]

वसुधा विधवा है | वह सुशिक्षित नारी है | वसुधा इस उपन्यास की केंद्रबिंदु है | वसुधा लखनऊ विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र की प्राध्यापिका है | वसुधा के पति निखिल की मृत्यु एक कार दुर्घटना में हुई है | निखिल के मर जाने के बाद वह अपने माँ,भाभी के साथ लखनऊ में रहती है | "वसुधा के मानसिक पटल में अभी भी उसके सुखमय वैवाहिक जीवन की स्मृतियाँ और उनसे संबंधिंत करुणा आज भी उसके समक्ष उभर रही है | वह एक सामान्य सुखी जीवन जो भारतीय विवाह संस्कार ने उसे प्रदान किया था | शायद वह दुर्घटना न होती तो वसुधा का जीवन भी सुखी बन जाता |"[४५]वसुधा सामाजिक संस्कारों के दबाव और अपनी मानसिकता के भंवर में दबी उलझी है कि उसके लिए कोई रास्ता नहीं बन पाता | वसुधा के भाई-भाभी उससे बहुत प्यार करते है | वह उसका पुनर्विवाह भी करना चाहते है | किन्तु निखिल की मृत्यु के बाद भी वसुधा उसके साथ पत्नी रूप में बिताये गये जीवन की स्मृतियों के तन्तु जाल से लिपटी हुई है | वसुधा के

मन पर भारतीय संस्कार का प्रभाव पड़ा है | वह स्मृतियों के माध्यम से ही पति का साहचर्य बनाये रखना चाहती है | इस सुदृढ़ संस्कारशील के कारण वसुधा का चरित्र एक प्रगतिशील क्लासिक चरित्र बन गया है | वसुधा उपर से कठोर दिखाई देती है, किन्तु उसका हृदय कोमल है | वसुधा एक सहनशील नारी के रूप में पाठकों के समक्ष आती है |

वसुधा का संपर्क दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो.विवेक से होता है | वह विवेक को जीवन साथी के रूप में चुनने के लिए मानसिक रूप से तैयार हो जाती है | परंतु विवेक अपनी भावनात्मक समस्याओं के कारण वसुधा को चाहते हुए भी विवाह करना नहीं चाहता | वसुधा जब दक्षिण भारत की यात्रा पर जाती है,तब वह आनंद के संपर्क में आ जाती है | वसुधा और आनंद दोनों भावनात्मक दृष्टि से घनिष्ट हो जाते है और वह विवाह करने का निश्चय करते है |

विवेक:-

'तत-सम' उपन्यास का दूसरा प्रमुख पुरुष पात्र है विवेक | विवेक संवेदनशील,महत्वाकांक्षी है | वह दिल्ली विश्वविद्यालय में अंग्रेजी का प्रोफेसर है | वह उच्चवर्गीय कुलीन परिवार का है | उसका व्यक्तित्व आकर्षक है | विवेक की वसुधा से मुलाकात दिल्ली के यूथ फेस्टीवल में होती है | विवेक और वसुधा दोनों एक-दूसरे के प्रति आकर्षित है | किन्तु विवेक अपनी प्रेमिका शिरीन की यादों को भूला नहीं पाता | उसमें हीनता की भावना दिखाई देती है | विवेक का अपना एक भयावह अतीत है,जो उसके वर्तमान के लिए संहारक है | उपन्यास में विवेक का जीवन दुःख से भरा हुआ

दिखाई देता है | उसकी अपनी मानसिक समस्याएँ हैं जिसके कारण वह चाहकर भी वसुधा से शादी नहीं कर सकता |

प्रो.विवेक अपनी पत्नी के अंतिम दिनों को भाव-प्रवण होकर स्मरण करते हुए पिघल जाता है-"ऐसी आँखे...फटी-फटी,डूबी हुई...गीली | कातर | याचक | आँखों के कोए इतने सफ़ेद कि मरे कबूतरों की याद दिलाते थे | डॉक्टरों से क्या-क्या याचनाएँ नहीं की मैंने...दोज़ हार्टलेस ब्रूट्स....| वह मेरी पीठ थपथपाते रहे और पलंग से उठ जाने का इशारा करते रहे...|"[४६] शिरीन की मृत्यु का प्रसंग उसे झकझोर देता है |

वसुधा को विवेक के व्यक्तित्व को देखकर लगता है कि उसे वह संरक्षण दे पायेगा, किन्तु विवेक का व्यवहार वसुधा के कोमल मन को आघात देता है | वह समझ जाती है कि "विवेक एक सेल्फ सेंटर्ड घोस्ट है |"[४७] विवेक भी वसुधा के समान अभाव में जी रहा है | इस अर्थ में दोनों 'तत-सम' है |

आनंद :-

आनंद 'तत-सम' उपन्यास का तीसरा प्रमुख पात्र है | आनंद का पात्र उपन्यास के उत्तरार्ध में आता है | आनंद का चरित्र आदर्श पुरुष का है | आनंद की वसुधा से मुलाकात दक्षिण की यात्रा में वसुधा की आकस्मिक बीमारी के बीच बंदीपूर के गेस्ट हाऊस में होती है | वह बीमार वसुधा की सेवा करता है | आनंद और वसुधा का सामान्य परिचय धीरे-धीरे प्रगाढ़ हो जाता है | दोनों अपने अपने अतीत को एक-दूसरे के सामने रखते है | आनंद वसुधा के जीवन में एक सहज स्वाभाविक चरित्र के रूप में उभरता है-"आनंद के खुले बेबाक व्यक्तित्व में न तो विवेक की बेवजह सतर्कता है और न ही व्यवहारों की परतों से झाँकता उद्वेग | आनंद के

व्यवहार में न तो किसी तरह का दबाव, न याचना, न ही किसी तरह का व्यक्त या अव्यक्त उत्ताज | आनंद के रूप में वसुधा को मिला सहस्त्रों परतों वाली प्रभुता में सँभला सा चेहरा सांद्रता के एक ही बिंदु पर सिमटा और पिघला हुआ चेहरा |"[४८] आनंद अपनी आक्रांत मानसिकता में भी बेहद सहज और मुक्त है | वह अपने यातना भरे अतीत के बावजूद भी वर्तमान से जुड़ा रहता है |

'तत-सम' के गौण पात्र:-

रूथ,कल्पना:-

रूथ और कल्पना वसुधा की सहेलियाँ है | रूथ और वसुधा एम.ए. के दिनों में एक ही होस्टल में रहते थे | रूथ वसुधा की रूममेट है | रूथ अनाथ है | वह मिशनरियों में पाली-पोसी गयी है | रूथ अपनी थीसिस के सिलसिले में भारत आयी हुई है | उसकी थीसिस का नाम है-"एटिट्यूडस रिगार्डिंग री-मैरिज इन इंडियन सोसायटी"[४९]

रूथ के व्यक्तित्व में आक्रामकता है-"व्यक्तित्व था कि दुर्भाग्य की दीनता-दयनीयता से पूरी तरह अछूता | स्वभाव में अपनी धारणाओं की जकड़ ही नहीं,स्वीकार करा सकने की हठधर्मी भी अचूक | आक्रामकता को उस हद तक तानकर ले जाती थी जहाँ सामनेवाला भी तनतनाकर एकाएक खड़ा हो जाने को विवश हो जाये |"[५०] रूथ वसुधा के साथ अक्सर तलाक और पुनर्विवाह के प्रंसग को लेकर ही बात करती थी |

शरतभैया, भाभी :-

शरतभैया, भाभी 'तत-सम' की नायिका वसुधा के भाई-भाभी है | दोनों वसुधा से बहुत प्यार करते है | शरतभैया,भाभी आधुनिक विचारोंवाले है | वह वसुधा का पुनर्विवाह करना चाहते है |

शरतभैया के मतानुसार पूनर्विवाह एक सहज प्राकृतिक प्रक्रिया है | उनका कहना है कि शिक्षित होने के कारण हममें इतनी विवेकशीलता तो होनी ही चाहिए कि बिखराव के बाद नये सिरे से जिंदगी को सँवारा जाए | उनके अनुसार-"इतना विवेक तो पक्षियों में भी होता है कि एक जगह घोंसला तोड़कर दूसरी जगह बनाने बैठ जाते है |"[५१]

वसुधा की भाभी भी वसुधा के पूनर्विवाह के संदर्भ में सदा अपने पति के साथ खड़ी नजर आती है | वह आज के युग की बदलती नारी एंव उसके परिवेश का हवाला देकर अकेली स्त्री के जीवन की मुश्किलों के बारे में वसुधा को समझाना चाहती है | वसुधा की माँ जब विधवा विवाह का विरोध करती है, तब वह कहती है-"क्या ठीक कहती हैं अम्मा ? उनके ज़माने लद गये जब चूल्हा झोंकते कट जाती थी सारी ज़िंदगी | आजकल की तरह मरदों की दुनिया में रहना पड़ता तो पता चलता कि भेड़ियों के बीच रहना कैसा होता है | हर वक्त नोचने को तैयार बैठे रहते हैं | कहाँ तक अपने को बचाते फिरो |"[५२]

वसुधा की माँ :-

वसुधा की माँ का चित्रण गौण-पात्र के रूप में हुआ है | वह परंपरागत विचारोंवाली स्त्री है | वसुधा के पूनर्विवाह की बात उन्हें पसंद नहीं आती | वसुधा के विधवा होने को वह भाग्य का लिखा मानती है | उसे भगवान की मर्जी मानती है | उनका कहना है-"जो हो गया, सो हो गया | भगवान की मरजी में किसका दखल है |...सुख किस्मत में लिखा होता तो ऐसा होता हो क्या ?"[५३]

डॉ.ललितचंद :-

डॉ.ललितचंद लखनऊ विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के

प्रोफेसर है | वह वसुधा के सहपाठी है | वह बड़े हँसमुख व्यंगकार हैं | वह दिल्ली विश्वविद्यालय के समारोह के समय अपने छात्रों का प्रतिनिधित्व करते है |

बत्रा :-

किशोर बत्रा वसुधा का सहपाठी है | वह वसुधा को दिल्ली विश्वविद्यालय के समारोह में मिलता है | किशोर बत्रा संपादक है | वह वसुधा से अपने विश्वविद्यालय के दिनों की यादें ताजा कर देता है |

सुधीर,दिलीप :-

इन गौण पात्रों का चरित्र 'तत-सम' में कुछ क्षण के लिए ही दिखाई पड़ता है |

'निष्कवच' उपन्यास-

पहला वृत्तांत: कथावस्तु

राजी सेठ का दूसरा उपन्यास है'निष्कवच' |'निष्कवच' उपन्यास के 'पहले वृत्तांत' का केन्द्र नीरा है, जो एक स्त्री है | कथा में चित्रित तीन युवक विशाल, बासू, और रमण नीरा की मानसिकता को उजागर करने वाले तीन आयाम है | नीरा की मानसिकता को उजागर करने वाला पहला आयाम है विशाल | विशाल नीरा का मौसेरा भाई है | वह दोनों एक ही कमरे में रहते है, परन्तु दोनों में आत्मीयता पनपती ही नहीं |

दूसरा आयाम है, बासू जो फक्कड, विद्रोही स्वभाव का है | नीरा के मन में पुरुष की जो छवि है, वह उसे बासू के रूप में मिल गयी थी | विशाल यदि एक प्रकार की नैतिक स्थिति है, तो बासू उग्र बौद्धिक स्थिति | इन दोनों स्थितियों के बीच तीसरी स्थिति का आगमन होता है, वह है भौतिक स्थिति | रमण भौतिक स्थिति

है | यह दोनों स्थितियाँ तीसरी स्थिति के सामने कमजोर पड़ जाती है | नीरा रमण की धनदौलत देखकर बासू के प्यार को ठुकरा कर रमण को अपनाती है |

नीरा को विशाल के घर पढ़ाई के लिए लाया गया है | नीरा की खाट विशाल के कमरे में लगा दी गई है | दोनों एक ही कमरे में रहते हैं | दोनों साथ स्कूल जाया करते हैं, परन्तु विशाल के मन में नीरा के ऐसे अचानक प्रवेश का कोई स्थान नहीं था | नीरा और विशाल के बीच पारस्पारिकता ने कभी जन्म ही नहीं लिया | विशाल अपनी माँ के कहने पर नीरा के साथ ललक और सहानूभूति से पेश आता है | ऐसा करके वह अपनी माँ के डाँट फटकर से बचना चाहता है | विशाल समझ गया था कि नीरा के आगमन से उसकी माँ के व्यवहार में परिवर्तन आया है-"इस स्थिति का कष्ट न उसके आने के पहले था ,न बाद में | कष्ट कुछ था तो माँ के हाथ में पकड़ी लोहे की मापक छड़ का, जो हर चीज को एक ही सीध में मापना चाहती थी |"[५४]

विशाल को पढ़ाई का शौक है | वह हमेशा एक तरह की पुस्तकों से ऊबने पर दूसरी तरह की पुस्तकों में डूबा रहता है | विशाल नीरा को भी लायब्रेरी से किताबें लाकर देता है, पर किताबें पढ़ने जैसे पराक्रम का शौक नीरा में नहीं है | वह बासू के आते ही उसके साथ शतरंज खेलने बैठ जाती है | बासू विशाल का मित्र है | उसका आना-जाना विशाल के घर लगा रहता है | बासू और नीरा एक-दूसरे के प्रति आकर्षित हो जाते है | बासू और नीरा के बीच की नजदीकी प्यार में बदल जाती है |

विशाल को इस बात की भनक लग जाता है | विशाल की माँ भी चेत गयी थी कि नीरा और बासू में कुछ गुह्य चल रहा है |

नीरा और बासू के संबंध को लेकर विशाल और उसकी माँ चिंतित रहने लगे थे | विशाल की माँ विशाल को साफ़ कह देती है कि अपने दोस्तों को घर पर नहीं बल्कि बाहर मिला करों | अपनी माँ की चिंता देख विशाल बासू को समझाने होस्टल जाता है | परंतु विशाल के कुछ कहने से पहले ही बासू अपने मन पर से बोझ कम करता हुआ नीरा के संदर्भ में कहता है,"पा सकने को महसूस करने के लिए वह किसी भी हद तक जाना चाहती है....मेरा मतलब है, जा सकती है | मैं खुद उसके दुस्साहस से डरता हूँ | अपने लिए नहीं, तुम सब के लिए....मेरे लिए वही असली लगाम है... | बुलाती है तो जाना पड़ता है | न जाओ तो नीचे से ऊपर तक धोकर रख देती है |"[५५]

विशाल तभी बासू के सामने नीरा के साथ शादी करने का प्रस्ताव रखता है | बासू नीरा के साथ शादी करने के प्रस्ताव को नकारता हुआ कहता है,"शादी कर लूँ ?....मैं ?....उस बच्ची से ? उसमें अपने बराबर की औरत ढूँढने बैठूं ?..."[५६] बासू नीरा के साथ शादी करने के प्रस्ताव को नकारता तो है | परंतु उन दोनों के बीच स्वच्छंद संबंधों की स्थिति वैसी ही बनी रहती है |

बासू जब भी विशाल के घर आता था यथासंभव बना रहता था | विशाल की माँ बासू को घर में देखकर तमतमा उठती है | विशाल बासू को समझाने दुबारा उसके होस्टल जाता है | वह बासू को कहता है कि अगर नीरा तुम्हें मिलने बुलाती है तो उसे साफ इनकार कर देना और ऐसा नहीं कर सकते तो उससे शादी कर लेना | नीरा के साथ शादी की बात सुनकर बासू विशाल को कहता है कि वह शादी से दूर भागती-"शादी ?.....वह क्या करेगी शादी ?.....तुम नहीं समझ पाओगे | शादी अभी उसे विश्वास लायक चीज़

नहीं लगती | जब लगेगी तब लगेगी | अभी तो ऐसे छिटकती है.....|"[५७]

बासू की बातें सुनकर विशाल चौंक जाता है | विशाल के समझाने के बाद बासू कई दिनों तक उसके घर नहीं आता | बासू के न आने पर नीरा व्याकुल हो जाती है | वह विशाल से कहती है कि मैं बासू को उसके होस्टल मिलने जाऊँगी | नीरा बासू को होस्टल मिलने जाए उससे पहले विशाल खुद बासू को फोन करके घर बुलाता है | बासू विशाल के घर आता है,पर वह वहाँ अधिक समय तक न रूककर क्लब में चला जाता है | उसके साथ विशाल और नीरा भी क्लब में चले जाते हैं | वही क्लब में चावला दांपत्य नीरा को देखते है | पहली नजर में ही चावला दांपत्य को नीरा पसंद आती है | वह नीरा को अपनी बहू बनाना चाहते थे | आखिर नीरा का रमण के साथ रिश्ता तय हो जाता है | रमण चावला परिवार का इकलौता बेटा था | इंजीनियर था, धन दौलत की कोई कमी नहीं थी | नीरा भी खुशी से रमण के साथ शादी के लिए तैयार हो जाती है | रमण के साथ शादी तय होने के बाद नीरा अपने पूर्वप्रेमी बासू को टालती है | विशाल बासू को ही इस स्थिति का जिम्मेदार ठहरता है |

विशाल बासू को कहता है कि तू ही उसके साथ शादी करने को तैयार नहीं था | तब बासू तमतमा कर बोल उठता है,"मैं तैयार नहीं था ? हाँ, शुरू में, पर अब तो वह तैयार नहीं थी, उसे अभी यह सब नहीं करना था शादी-वादी, बच्चे-कच्चे | अब यह इंजीनियर बाबू क्या 'अभी' में नहीं आते ? मैं ही रह गया था, ध्वस्त करने को |"[५८]बासू क्रोधित होकर कहता है कि-"मैं ठगा गया.....गलत सिद्ध हुआ ? मूर्ख निकला ? अच्छा लगेगा तुम्हें

क्योंकि कब से टोक रहे थे तू मुझे ! अच्छा लगेगा क्योंकि मूर्ख आदमी वैसे भी अच्छे लगते है लोगों को | उन्हें देखकर अपने समझदार होने का अभिमान हाथ लगता है.....क्या जानना है तुम्हें कि मैं कितने फुट की ऊँचाई से गिरा हूँ....कितना कटा-फटा हूँ ?"[५९] बासू अंदर से बुरी तरह से टूट जाता है | वह उसी साल ड्रॉप करके चला जाता है | विशाल 'इंडियन एक्सप्रेस' में बासू की फोटो भोपाल से कन्याकुमारी साइकिल पर जानेवाले अगुआ के रूप में देखता है |

'निष्कवच' उपन्यास के पहले वृत्तांत में चावला दंपति का क्लब में आना बासू और नीरा का युग्म खंडित करते हुए एक और नया युग्म रच देता है | रमेश दवे कहते हैं-"यहाँ राजीजी ने भावलोक की आत्मसत्ता पर भौतिक लोक की व्यवहार सत्ता की विजय को रच कर यह बता दिया है कि प्रेम या आत्मीयता किसी भी निरंतरता की प्रतिज्ञा नहीं है बल्कि ऐसी भावुकता का तो भौतिकताएँ अपहरण कर लेती है |"[६०]

'पहले वृत्तांत' में राजीजी ने भावजीवन को बासू में जिन्दा रखने की कोशिश की है,वही भौतिक जीवन को निष्कवच किया है | बासू में प्रेम है, भावुकता है | प्रेम कभी अपनी समग्रता में प्रकट नहीं होता | उसकी अभिव्यक्ति होती है, परंतु अपूर्णता में | बासू अपूर्ण है, परंतु नीरा, रमण, चावला परिवार भौतिक वस्तु की संज्ञायें हैं | वस्तु का निष्कवच होना आसान है | इसलिए निष्कवच वस्तु सत्ता का ही है, भाव सत्ता का नहीं | मतलब बासू निष्कवच नहीं होता, बल्कि असल में नीरा, विशाल, रमण निष्कवच होते देखाई देते है |

दूसरा वृत्तांत:-

कथावस्तु:-

'निष्कवच' उपन्यास के 'वृत्तांत दो' के केन्द्र में कथानायक है | नायक अमेरिका जाना चाहता है | नायक के पिताजी नहीं चाहते थे कि वह अपनी पढ़ाई पूरी होने तक विदेश चला जाए | नायक अपने पिता को समझाते हुए कहता है कि विदेश में पढ़ाई और कमाई साथ-साथ होती रहेगी | नायक बड़ी चतुराई से अपने पिता को मना लेता है | नायक के पिता अपने बेटे को अमेरिका जाने की इजाजत देते है | नायक अमेरिका जाकर अपने दोस्त प्रशांत के साथ रहने लगता है,किन्तु प्रशांत कुछ ही दिनों में नायक को धोखा देकर भाग जाता है | इतना ही नहीं वह अपार्टमेन्ट का किराया भी नायक के माथे पर डाल देता है | नायक पूरी तरह फँस जाता है | उसके पास किराया देने के लिए पैसे नहीं थे |

एक रात नायक तलमार्ग से गुजर रहा था | उसी समय एक लम्बा तगड़ा आदमी आकर उसकी नाक की नोक पर जबरदस्त घूँसा जमा देता है | वह विदेशी आदमी नायक के पास पैसे माँग रहा था | नायक की जेब में से उसे सिर्फ एक धातु का सिक्का मिलता है | उस धातु के सिक्के को देख विदेशी आदमी 'ब्लडी इण्डियन' कहकर जूते की नोक से नायक के मुँह पर ओर एक ठोकर मार देता है जिससे नायक बेहोश हो जाता है |

नायक को बेहोश की हालत में एक युवक'जेनिथ फोटोग्राफर' नामक स्टुडिओ में ले आता है | वह स्टुडिओ मार्था नामक विदेशी युवती का था और जो युवक नायक को बेहोशी की हालत में ले आया था ,वह मार्था का पार्टनर राबर्ट्स था | मार्था नायक की अच्छे से देखभाल करती है | इतना ही नहीं वह नायक को अपने

स्टूडियो में नौकरी भी दिलाती है, साथ में उसे रहने के लिए छोटा-सा कमरा भी देती है | मार्था नायक के पुराने मकान का किराया भी चुकाती है | मार्था नायक की तरफ आकर्षित होने लगती है | मार्था और नायक में दैहिक संबंध बँध जाते है |

मार्था पर अपने संस्कृति के विचार पूरी तरह से हावी है | वह बार-बार नायक को अपने बाहों में भरने की और चूमने की कोशिश में लगी रहती है | मार्था के साथ नायक के यौनसंबंध निमंत्रणमूलक पहल पर हो जाते है-"आँखे तरेरते हुए वह मेरी बगलों के नीचे अपने हाथ घोंप देती है | धीरे-धीरे मुझे फर्श पर घसीटकर अपनी लंबाई से ढाँप देती है | फिर से सब कुछ ढक जाता है | भीतर वही सीढ़ियाँ दिखाई देने लग जाती हैं जो सदा अलग-अलग मालों पर ले जाती है | बाहर शरीर काम करने लग जाता है | मार्था तृप्त होती है |"[६१] स्टूडियो में मार्था के संरक्षण में काम करते हुए भी नायक उसके स्पर्श से बचता नहीं | बिना विवाह के मार्था के साथ रहते हुए नायक अनुभव करता है-"तब से एक क्रिया थी, जो मुझ पर क्रियान्वित होने लगी थी | लगा,चुने बिना ही मैं एकाएक चुन लिया गया हूँ | झेलने लगा हूँ |"[६२] अब नायक ऐसा न करता तो मार्था उसे नौकरी से अलग कर सकती थी, उससे कमरा भी छिन सकती थी |

मार्था गर्भवती बन जाती है | मार्था भारतीय स्त्री नहीं थी,बल्कि पाश्चात्य संस्कृति में पली-बड़ी थी | वह मातृत्व को अपनाना नहीं चाहती थी | वह अपने स्त्रीत्व को बनाये रखना चाहती थी | वह नायक को बताये बिना ही अस्पताल जाकर गर्भपात करवाती है | नायक को जब इस बात का पता चलता है तब वह मार्था पर क्रोधित हो उठता है तभी मार्था कहती है, "यह

मेरी देह है | मेरा निजी मामला | मेरा ही परमाधिकार |"[६३] मार्था अपनी देह पर अपना ही परम अधिकार बताते हुए कहती है,"मैं अमिनोसेंटेसिस के लिए गई थी | पता लगा, लड़का है | तब तो और भी आसान हो गया मेरे लिए फैसला | भला मैं क्यों उनकी नस्ल को बढ़ाना चाहूँगी |"[६४]रमेश दवे कहते हैं-"मार्था का ऐसी बात कहना यहाँ एक स्त्री के अंदर शक्ति का उद्घोष है क्योंकि स्त्री जब पुरुष सत्ता को भोगते-भोगते अपनी आत्मशक्ति का आविष्कार करती है तो वह अपने प्रति भी क्रूर हो जाती है और पुरुष-पीढ़ी की उत्पादिका बनने के बजाय उसे भ्रूण में मिटा देना चाहती है |"[६५]

नायक के प्रति मार्था के दिल में कोई चाह नहीं है | मार्था नायक से सिर्फ दैहिक सुख चाहती है | मार्था के व्यवहार से नायक बहुत दुखी है | वह खालीपन महसूस करता है | नायक भारत अपने घर आना चाहता है | उसे अमेरिका आये तीन साल हो गये हैं | परन्तु उसकी मजबूरी यह थी कि उसके पास उतने पैसे नहीं थे जिससे वह टिकट ले कर स्वदेश अपने घर आ सके | नायक और उसकी माँ चिट्ठी के द्वारा एक-दूसरे का हालचाल पूछते रहते हैं | एक दिन नायक को मित्र वसीम के कारण भारत अपने घर आने का मौका मिलता है | वसीम अपनी शादी के सिलसिले में घर आने वाला था | अत: वह नायक को भी अपने साथ लेकर आता है | नायक को देख घर के सभी सदस्य आनंदित हो जाते है | कमली नायक के लिए जब चाय बनाकर लाती है, तब नायक का भाई कमली को कहता है कि यह फोटो वाले भैया है | उस वक्त कमली कहती है कि,"अब वह फोटो है नहीं |"[६६]कमली की यह बात सुनकर नायक तुरंत टी.वी के ओर देखता है, जहाँ उसकी फोटो रहती थी | वहाँ नायक की फोटो नहीं बल्कि गणेशजी की मूर्ति रखी हुई थी |

नायक टी.वी पर अपनी फोटो न देखकर व्याकुल हो उठता है | उसके मन में फोटो के बारे में जानने की जिज्ञासा सुलग उठती है | वह जानना चाहता था कि आखिर उसकी फोटो वहाँ से क्यों हटायी गयी ? नायक बार-बार माँ को फोटो के बारे में पूछता है | नायक की माँ कुछ न कुछ बहाना बनाकर इस बात को टालती रहती है | नायक भी अपने इस विचार को भीतर से स्थगित कर देता है और बाहर टहलने जाता है | बगीचे में टहलते समय उसे श्यामली की याद आती है, जो नायक से प्यार करती थी | किन्तु नायक ने मार्था के साथ संबंध बनाकर श्यामली के साथ बनते रिश्ते को स्लेट पर लिखी इबारत की तरह पोंछ दिया था |

घर वापस आने पर नायक को वहीं बात याद आती है | वह फिर से माँ के पास जाकर फोटोवाली बात को छेडता है | नायक को फोटो के बारे में बताते समय माँ की आँखे पानी से भर आती है और आवाज हाँफने लगती है | वह नायक को कहती है, "अब सुनेगा तू....सुनना चाहेगा तू ? काँच हो गयी थी....निरा काँच...तेरी फोटो....देखते-देखते | सिर्फ एक चौखटा.....लोहे का |....तेरे बिना | हाथ बढ़ाती थी तो सख्ती रोक देती थी वहीं, निगोड़ी |"[६७] ऐसा कहकर वह नायक के कन्धे से लगकर एकाएक रो पड़ती है | नायक अपनी माँ को ढाढ़स देता है और कहता है,"मैं जाते ही तुम्हें एक लाजवाब फोटो भेजूँगा | उस पर काँच लगवाना ही नहीं पड़ेगा | छू लोगी,जब चाहोगी | तुम्हें अच्छा लगेगा |"[६८] माँ जैसे विदेश जानेवाले बेटे से अपने आप को अलग महसूस करती है | वह नायक से कहती है, "म्ममुझे ? मुझे भेजेगा ? बता नहीं चुकी मैं ? मुझे करनी क्या है तुम्हारी फोटो ?" [६९]

वसीम नायक को फोन करके कहता है कि उसकी शादी

माता-पिता के पसंद की लड़की नुसरत के साथ तय हो गई है | साथ ही वसीम अमेरिका वापस जाने की बात भी करता है | वसीम का फोन आने पर नायक रातभर सो नहीं पता | नायक का वापस अमेरिका जाने का मन नहीं था, किन्तु उसको पता है कि अगर वह विदेश नहीं जायेगा तो परिवार के सामने बोले सारे झूठ निथर आएँगे |

'निष्कवच' के दूसरे वृत्तांत की कथा में निजी पीड़ा का एहसास इस प्रकार घटित हुआ है कि यथार्थवादियों का यथार्थ भी जिसके आगे छोटा लगने लगता है | "वृत्तांत दो' में दो प्रकार की नारियों का चित्रण हुआ है, जिसमें एक है भारतीय नारी और दूसरी है विदेशी नारी | भारतीय नारी ने अपने माँ-पन को केंद्र में रखा है, तो अमरीकी नारी ने अपने स्त्रीत्व को | भारतीय नारी अपने बच्चों की ही नहीं बल्कि पूरे घर-परिवार की माँ होती है,तो अमरीकी नारी वृद्धावस्था तक अपने स्त्रीत्व को ही बनाये रखना चाहती है |"[७०]

राजी सेठ का 'निष्कवच' उपन्यास समकालीन कथा साहित्य की एक उपलब्धि है |"निष्कवच' उपन्यास के 'पहले वृत्तांत' में अपने घर में अपनी ही अजनबीयत से उत्पन्न उखड़ेपन, असंतुलनमूलक बेचैनी, भटकाव और चुनौतियों के समक्ष छोटे पड़ते जाने की कमतरी का अहसास है, तो 'दूसरे वृत्तांत' में आदमी के वजूद में रची-बसी उसकी अपनी धरती, अपनी भाषा, मिटटी् और अपनी धूप से अलग होते जाने की पीड़ा का वर्णन है | 'निष्कवच' इसलिए दो ऐसी कथाओं का सम्मिलन हैं जो व्यक्ति और विचार को निष्कवच करता है सीम और असीम को निष्कवच करता है, आत्मसंघर्ष और आत्ममुक्ति को निष्कवच करता है |"[७१]

निष्कवच का कथ्य:-

मूल्य संक्रमण की डगमगाहट से उपजी मानसिकता :-

राजी सेठ का 'निष्कवच' उपन्यास जीवनमूल्य से जूझती युवा-पीढ़ी की कथा है |"निष्कवच' उपन्यास के पहले वृत्तांत की नीरा के लिए न सामाजिक मूल्य महत्त्वपूर्ण है और न परंपरागत मूल्य | अपनी निष्कवच स्थिति के प्रति सजग होने के कारण वह मूल्यों और रिश्तों के प्रति अनादर से भरी रहती है |"[७२]'मातृत्व' उसके लिए तो मूल्यहीन है | नीरा की परित्यक्ता माँ अपने सुख-दुःख के बारे में न सोचकर सिर्फ अपनी बेटे के बारे में सोचती है | किन्तु नीरा अपने माँ के त्याग को न देख पाती है और न ही उसकी संवेदना को समझ पाती है | माँ के प्रति उसके दिल में नफरत है | वह अपनी माँ के बारे में बासू से कहती है...."तुम मेरी मम्मी की बात कर रहे हो न ? मैं कुछ भी नहीं हूँ उनके लिए | जब जहाँ चाहा, ठेल दिया | मेरी पढ़ाई-लिखाई की बात को प्रमुख बनाकर... स्कूल की वह छोटी-छोटी छोकरियाँ उन्हें ज्यादा प्यारी लगती है... सच तो यह है कि वह मुझे कभी अपनी माँ ही नहीं लगती | कुछ कहते रहो, कभी नहीं समझती | तुम्हें क्या पता उन्होंने कितना त्याग रखा है..... मनहूस जानकर | दूसरों के हवाले कर रखा है |"[७३]उसे विशाल की माँ अपनी नहीं लगती | तभी तो वह कहती है "वह तुम्हारी माँ हैं, मेरी माँ नहीं | आंटी तो आंटी ही होती है |"[७४]

नीरा तो सिर्फ भौतिकवादी दृष्टिकोण को ही अहमियत देती है | उसके लिए प्यार, समर्पण मूल्यहीन है | भौतिकवादी दृष्टिकोण ने उसे मूल्यहीन बना दिया है | इसी दृष्टिकोण की वजह से वह बासू के प्रेम को ठुकराकर रमण को पति के रूप चुन लेती है |

रमेश दवेजी सही कहते हैं-"मनुष्य का मानसिक और नैतिक सब कुछ किसी भी भौतिक सत्य के समक्ष पराजित हो जाता है | भौतिकताएँ कितनी निर्मम, निष्ठुर होकर भी कितनी आकर्षक होती है.... भौतिकताएँ आंतरिक आश्वस्तियों के समस्त आदर्शों का अपहरण कर सकती हैं, न वहाँ सामाजिकता के मूल्य बचते है, न सांस्कृतिक आस्थाएँ बचती है, और न नैतिक परिभाषाएँ काम आती आती |"[७५]रमण के धन के सामने बासू के तन-मन तिरोहित हो जाते है |

"आधुनिकतावादी दृष्टिकोण ने काम-संबंधों के प्रति मान्य मूल्यों को भी परिवर्तित कर दिया है | पहले विवाहपूर्व काम संबंध को वर्ज्य माना जाता था | किन्तु आज की लड़कियाँ विवाहपूर्व काम-संबंधों से परहेज नहीं करती |"[७६]नीरा भी आज की लड़कियों में से ही एक है | बासू के साथ विवाहपूर्व काम-संबंध बनाने से नहीं डरती | नीरा की हरकतें देखकर उसकी मौसी कहा करती है-"अब एक दिन में कितनी बार मुँह काला करवाने आयेगा |..... मालूम है, मैं चार बजे आयी तो वह यही था..... दोनों थे अकेले |"[७७]

राजी सेठ 'निष्कवच' उपन्यास के 'वृत्तांत दो' के माध्यम से मूल्य संक्रमण की डगमगाहट से उपजी मानसिकता को दिशा देने का प्रयास किया है | तभी तो नीरा युवा-पीढ़ी के जिस सामाजिक, नैतिक, परंपरागत मूल्यों की अवहेलना करती दिखायी देती है, वहीं दूसरे वृत्तांत का कथानायक इन्हीं मूल्यों को मुट्ठी में बाँध कर रखने का प्रयास करता दिखायी देता है | नीरा को अपनी 'माँ' माँ नहीं लगती,लेकिन विशाल के लिए उसकी 'माँ' सनातनता, सार्वभौमिक है | वह कहता है-"संसार की ऐसी कोई किताब नहीं होगी जहाँ माँ दरज न हुई हो |

क्योंकि माँ व्यक्ति नहीं सनातनता है 'शी इज ए टाइमलेस कान्सेप्ट |"[७८] नायक विदेशी संस्कृति में रहकर भी 'मूल्यों'के प्रति सजग है | वह नीरा के जैसा नहीं है | "अमेरिका के देहवादी प्रेम की संस्कृति में श्यामली के प्रति उसका प्रेम मिटता नहीं है | मार्था नायक की आवश्यकताजनित विवशता है | मार्था के साथ उसका रिश्ता स्थूलता है किन्तु श्यामली तो अपनी 'सूक्ष्मता' से स्पंदित होती रहती है | एक स्पंदन ही मार्था के साथ होते हुए भी उसके सानिध्य के एहसास से परे है |"[७९]

राजी सेठ ने अपने 'निष्कवच' उपन्यास के दोनों वृत्तांत में मूल्य संक्रमण से उपजी युवा-पीढ़ी की मानसिकता को कथ्य के रूप में चुना है | आज के बदलते परिवेश में युवा-पीढ़ी संक्रमित होते जीवनमूल्यों के समक्ष निष्कवच खड़ी है | किन मूल्यों को छोड़े ? और किन मूल्यों को अपनाएँ ? कहाँ जाएँ ? ऐसे अनेक प्रश्नों के से जूझ रही है |

दूसरा वृत्तांत :-

पाश्चात्य संस्कृति का मोह :-

एक संस्कृति को दूसरी संस्कृति अपने प्रभुत्व से किस प्रकार अपहृत कर लेती है,भारतीयता का संस्कार अमेरिकी भौतिकवाद के समक्ष किस तरह हताश महसूस करता है, इसी को राजी सेठ ने 'दूसरे वृत्तांत' के कथ्य के रूप में चुना है | 'वृत्तांत दो' का कथानायक पाश्चात्य संस्कृति के मोह में अपनी शिक्षा पूरी किये बिना ही अमेरिका चला जाता है | डॉ.मधु सिंधु के अनुसार- "जिस प्रकार पुराने जमाने में भाग्य आजमाने लोग विदेश जाते थे, उसी प्रकार 'वृत्तांत दो' का कथानायक भी रिश्तों के प्रति अनाशक्ति और झटके में ही सब कुछ पा लेने की आकांक्षा में ही

विदेश के लिए उड़ जाता है |"[८०]नायक अमेरिका प्रशांत का 'एक्सपोर्ट का धंधा' संभालने जाता है | वहाँ जाने पर नायक को पता चलता है कि प्रशांत किसी कलूटी का पीछा करते शिकागो पहुँच गया है | "जिन विषमताओं को भोगते हुए नायक ने अमेरिकी प्रवास अपनाया था, वहाँ भी विषमताओं के अनेक टीबडडो... से उसे टकराना पड़ता है |"[८१] उसे आजीविका के लिए- "दिन में केंडी बेचनी पड़ती है | थोड़े से सेण्टस का जुगाड करने के लिए कारों में पेट्रोल भरना पड़ता है | होटलों में क्रॉकरी धोनी पड़ती है | फुटपाथ पर काश्मीरी मफलर और गुजरातियों की बनायी हुई कॉस्ट्यूम ज्युलरी बेचनी पड़ती है | उन सब को सम्मान देने के लिए मेरे पास कुछ नहीं है | कुछ नहीं था |"[८२]

विदेश में कोई भी काम सीखने के लिए ग्रीन कार्ड की आवश्यकता होती है | कथानायक के पास ग्रीन कार्ड भी नहीं है | नायक जानता है -"ग्रीन कार्ड सिकंदर कार्ड है | जब तक नहीं मिल जाता | मेरे मत्थे पर 'चीप लेबर' का ठप्पा लगा रहेगा | आत्मसम्मान कहीं बचा हो धुलता रहेगा |"[८३] नायक को विवश होकर मार्था की मदद लेनी पड़ती है | लेकिन मार्था उसका दैहिक शोषण करती है | नायक उसका विरोध नहीं कर पाता |

नायक आर्थिक मज़बूरी के कारण इच्छा होते हुए भी अपने परिवार वालों से मिलने आ नहीं पाता- "सरहदों के पार से आना इच्छा-अभीप्सा की सुंदरता तक सीमित नहीं | इच्छा की चलायमानता के मर्म को पाना पड़ता है | फिर उस उद्यम की खूँटी पर अपनी नियति के हर पल को टाँग देना पड़ता है |"[८४] नायक अपनी इच्छा से नहीं बल्कि वसीम के कारण भारत आ पाता है | नायक के आने-जाने का किराया वसीम देता है |

नायक की विदेश वापस जाने की इच्छा नहीं है, परंतु मज़बूरी है | वह समझता है कि विदेश वापस न जाने से उसके परिवार वालों का मोहभंग हो जायेगा | परिवार वालें यहीं समझते है कि नायक विदेश में अपने पैरों पर खड़ा है | "विदेश जैसे स्वर्ग में मेरे रहते होने से संतुष्ट हैं या अपने पैरों पर खड़े हो सकने के मेरे पराक्रम से संतुष्ट है या अपने पैरों पर खड़े हो सकने के मेरे पराक्रम से परितुष्ट, मैं नहीं जानता | उनके जानने-समझने के विधान में सेंध नहीं लगाना चाहता |"[८५] नायक चाहकर भी अपने न जाने की इच्छा को अपने माता-पिता के समक्ष व्यक्त नहीं कर पाता | अंत में वह मार्था के देश में लौट जाता है |

'निष्कवच' उपन्यास के 'पहले वृत्तांत' के मुख्य पात्र:-

विशाल:-

'निष्कवच' उपन्यास के पहले वृत्तांत का प्रमुख पात्र है- 'विशाल' | विशाल दुबला,चिड़चिड़ा,नाजुक,आज्ञाकारी,अंतर्मुखी,भावुक और अतिरिक्त संवेदनशील है | विशाल के पिताजी चाहते थे कि वह 'भारतीय प्रशासनिक सेवा में' प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करे | इसलिए उसे एम.ए में इतिहास विषय को लेकर पढ़ाई करने को कहते है | विशाल अपने पिता के आदेश को मान्य करता है | इसी प्रकार स्वीकार-नकार के बीच झूलना ही विशाल की नियति है | विशाल अपने पिता के विरुद्ध जाना नहीं चाहता है | तभी तो बासू उसे कहता है-"अगर तुम्हारे अंदर उतना अलग खड़ा रहने की ताकत नहीं है....तुम्हें अगर लता की तरह ही बढ़ना है तो तुम पेड़ से नाता क्यों तोड़ते हो ?"[८६]विशाल जैसी युवा पीढ़ी सामाजिक विकास के रास्ते पर गिट्टी की तरह बिछायी जा सकती है,मील का पत्थर नहीं बन सकती है |"[८७]

विशाल स्वभाव से अंतर्मुखी है | वह दोस्तों के लम्बे झुण्ड से उब जाता था | उसके सिर्फ दो ही अंतरंग दोस्त थे | एक इलाहबाद का भास्कर और दूसरा दिल्ली का बासू | उसे अकेले रहना अधिक पसंद है | तभी तो वह कहता है-"अकेलापन मुझे उबाता नहीं, बल्कि बहुत दिनों तक उपलब्ध न हो तो क्षुब्ध करता है |"[८८]

विशाल सहनशील है | विशाल भावुक युवक है | नीरा जब बासू के बजाय रमण से शादी कर लेती है, तो वह दु:खी हो जाता है | वह बासू का दु:ख बाँटने का प्रयास करता है | वह बासू की हालत देखकर उसे कहता है-"क्या तुम्हें पता हैं कि तुम्हारा टूटना जिंदगी के प्रति मेरी आस्था को कितना हिलाता है ?"[८९]

बासू :-

'निष्कवच' उपन्यास के पहले वृत्तांत का दूसरा प्रमुख पात्र है-'बासू' | बासू विशाल का दोस्त है | उसने इतिहास में एम.ए छोड़कर पात्रता परीक्षा करके आई,आई.टी में इलेक्ट्रोनिक्स में दाखिला किया था | बासू बेपरवाह, फक्कड, पुरुषों का पुरुष, मांसल, मुक्त आत्माश्वस्त,जोखिम की हदों से टकराने वाले साहस से परिपूर्ण है | "बासू का व्यक्तित्व ऐसा उर्जावान एवं जिन्दादिल की दूसरों के लिए ईर्ष्या का सबब बन जाएँ | 'बासू' के रूप में राजी ने एक ऐसे चरित्र की रचना की है जो युवापीढ़ी के लिए आदर्श बन सकता है |"[९०]

बासू के लिए परिवार का रुतबा, नाम,हैसियत बैसाखी के सामान है-"उसे बैसाखियाँ नहीं चाहिए | किसी की भी नहीं | न अपना इतिहास, न अपना परिवार, न अपने पिता का पद, न भाई के बढ़े-चढ़े बैरिस्टरपने की देशव्यापी गूँज | पैतृक पक्षधरता के

बने-बनाये परोसे से वह बचना चाहता है |"[९१]

बासू अपनी जिंदगी खुलकर जीना चाहता है | इसीलिए वह अपने घर,प्यार को अपनी राह में बाधक मानता है | वह अपने मन में जो आये वही करना चाहता है-"वही जो मन आये··· इसीलिए तो मैं आसानी से किसी को अपने घेरे में आने नहीं देता | यह टैगिंग बाधा डालती है | ये चीजें-मेरा मतलब है प्यार, घर, कोमलता-कितना डरपोक और प्रोटेक्टिव बनाती हैं इन्सान को |"[९२] बासू अपनी पुरानी पीढ़ी के प्रति पूरी तरह से असंवेदनशील है | विशाल के पिताजी जब कहते हैं कि आज की पीढ़ी को आजादी के बाद पोषी जा रही गुलाम मानसिकता को समझना चाहिए | उसे समझ कर ही भविष्य की दिशा तय की जा सकती है | तभी बासू कहता है-"मैं उस दुःख या विद्रोह को फिजूल समझता हूँ | हम···या हमारी पीढ़ी क्यों उस इतिहास की कैदी बनी रहे ! हमारी स्मृति में वह नहीं है तो नहीं है | हमारे लिए तो संसार ही वहीं से शुरू होता है जहाँ से हम शुरू हुए थे |"[९३]

बासू विशाल की बहन नीरा से प्रेम करता है | नीरा उसे छोड़कर जब रमण से शादी करती है,तब बासू व्यथित हो जाता है | घर, प्यार, कोमलता को बाधक मानने वाला निडर बासू प्रथम प्रेम की असफलता को, उस वेदना को झेल नहीं पाता | वह शहर से विलुप्त हो जाता है |

नीरा :-

'निष्कवच' उपन्यास के वृत्तांत एक का प्रमुख नारी पात्र है-'नीरा' | नीरा का व्यक्तित्व भी बासू के समकक्ष है | नीरा को ज्ञानार्जन में कोई रूचि नहीं है | इसी कारण विशाल जब उसे पढ़ने के लिए लाइब्रेरी से किताबें लाकर देता है,तब वह कहती है -"तुम्हें

किताबें चाटनी हैं तो चाटो | मैं तो.....अभी बासू आएगा तो उसके साथ बैठकर शतरज खेलूँगी |"[९४]

नीरा को किताबें नहीं बल्कि बासू अच्छा लगता है | वह उसके साथ आवारा जीवन जीने के लिए तैयार है | डॉ.मधु सिंधु के अनुसार-"नीरा को किशोरावस्था में प्रथम प्रेमी मिलता है | इस उमगायी, लालसाई जीवन और जीवित लोगों से स्नेह करने वाली किशोरी में आवारा किस्म की जिंदगी गुजारने की लालसा जन्म लेती है |"[९५]नीरा में आत्मीयता की भावना का अभाव है | वह आत्मकेंद्रित है | उसके दिल में अपनी 'परित्यक्ता' माँ के प्रति भी आदर प्रेम नहीं है |

वह विशाल के मित्र बासू से प्रेम करती है | वह बासू के साथ अपने संबंधों को खुलकर स्वीकार करते हुए कहती है-"वह मुझे अच्छा लगता है | अपना लगता है | इतना अच्छा मुझे आज तक कोई नहीं मिला |"[९६]बासू से प्यार करने वाली नीरा रमण को देख कर अपने पूर्व प्रेमी को भूल जाती है | वह पूर्व प्रेमी बासू के प्रेम के ठुकरा कर रमण की चकाचौंध वाली दुनिया, उसकी भौतिक संपत्ति के प्रति आकर्षित हो जाती है | वह रमण से शादी करती है | नीरा आधुनिक नारी है | नीरा का आधुनिक दृष्टिकोण अपनी संतान के प्रति ममत्व को भी प्रभावित करता है | वह अपने देह को सुंदर बनाना चाहती है | इसी कारण माँ बनने पर पर अपनी फिगर के बिगड़ जाने के डर से अपने बच्चे को दूध पिलाने से इंकार कर देती है | फिगर के प्रति अत्याधिक सजगता के कारण उसे ब्रेस्ट का ऑपरेशन करवाना पड़ता है | डॉ.मधु सिंधु के अनुसार-"आधुनिका के रूप में यहाँ नीरा का माँ रूप भी चित्रित है, जो बायलॉजिकल तथ्यों को चुनौती देती बच्चों को दूध पिलाने से

इंकार कर देती है और फलतः उसे ब्रेस्ट की गिल्टी को ऑपरेट करना पड़ता है | जिस फिगर के लिए वह इतनी सजग है उस पर काँट-छाँट के निशान ?"[९७]

'निष्कवच' उपन्यास के 'पहले वृत्तांत' के गौण पात्र:-

विशाल की माँ:-

पहले वृत्तांत के विशाल की माँ उदारमना कर्तव्यमयी है | नीरा को अपनी संतान के समान ही प्यार करती है | नीरा के प्रति उनका प्रेम झलकता-सा रहता है-"कर्तव्यों के वशीभूत होकर, ताकि नीरा को अपने माँ की कमी महसूस न हो | माँ मुझे टोकती | ताड़ना देती | वंचित करतीं | अपना पुत्र होने की अतिरिक्तता को मुझसे छिन-झपट कर उसके हवाले कर देना चाहती |"[९८]

विशाल के पिताजी :-

विशाल के पिताजी देश-विभाजन के इतिहास को भूले नहीं है | वह बार-बार देश विभाजन के इतिहास के बारे में बातें करते थे-"वह बार-बार वही दरवाजे खोल कर दिखाते थे जो उनके भोग का हिस्सा था-देश-विभाजन का इतिहास |"[९९]अँग्रेजों के प्रति भी उनके मन में गुस्सा है | उनका कहना है कि देशविभाजन के समय धर्म के नाम पर ठप्पा लगाकर लड़ते बलवाईयों को माफ़ किया जा सकता है पर अँग्रेजों को माफ़ नहीं किया जा सकता | उनका कहना है कि अँग्रेज हमारे देश को छोड़ कर चले गए है पर जाते जाते वह दिमागी गुलामी छोड़ गये है | वह आज की नई पीढ़ी को गुलामी और दासता से लड़ने की प्रेरणा देते है -"यह जो बादलों के हट जाने के बाद भी दासता में बने रहने का अँधेरा है..... वह ? वह खोट क्यों नहीं दिखाई देता किसी को ?....वही तो समझाने-बताने की बात है | मैं कहना चाहता हूँ,उससे लड़ो | कुछ करना चाहते हो

तो उस मनोवृत्ति से लड़ो…"[१००]

'निष्कवच' उपन्यास के 'दूसरे वृत्तांत' के पात्र :-

'निष्कवच' उपन्यास के 'दूसरे वृत्तांत' का कथानायक ही कथा का नैरेटर है | इसमें कथानायक, कथानायक की माँ, मार्था, वसीम, राबर्ट्स आदि मुख्य पात्र है | इसमें लगभग सभी वर्गगत पात्र हैं- पापा, माँ,भाई, भाभी, दोस्त,प्रेमिका, माली, दुकानदार, बच्चे आदि | वे एक तरह से चेहरा विहीन पात्र भी हैं जिनकी नाम रूपात्मक लकीरें जानबूझकर धुंधली और अस्पष्ट रखी गई हैं ताकि वे खास व्यक्ति के बजाय विचार या भावना संप्रेषित करने वाले आम प्रतीक चिन्हों के रूप में उभरें और पूरे वर्ग की वांछित चारित्रिकता को अधिक व्यापक और समावेशी रूप में अभिव्यक्त कर सके |

'निष्कवच' उपन्यास के 'दूसरे वृत्तांत' के मुख्य पात्र:-

कथानायक :-

राजी सेठ के 'निष्कवच' उपन्यास के 'दूसरे वृत्तांत' का कथानायक बी.ए पास युवक है | वह मित्र प्रशांत के बुलाने पर पढ़ाई छोडकर नौकरी करने के लिए अमेरिका चला जाता है | अमेरिका में उसे काफी संघर्ष करना पड़ता है | प्रशांत उसे धोखा देकर भाग जाता है | वह अमेरिकन युवती मार्था के सहारे खड़े होने का प्रयत्न करता है | मार्था कथानायक की मज़बूरी है | वह नायक की मदद करती है तो दैहिक शोषण भी करती है | कथानायक मार्था के हाथों की कठपुतली बनकर रह जाता है-"पर मार्था मार्था है | मेरे छोर को थामनेवाली कोई एक मुट्ठी नहीं है | मैं मार्था की अँगुलियों में उलझ गया हूँ | जलवायु में नया | ऋतुओं, व्यक्तियों, दिशाओं का अनभ्यस्त | मार्था मुझे सब-वे से उठवाती है | मकान दिलवाती है | नौकरी देती है | जैकेटस बिकवाती है पर मार्था मुझे

त्याग भी सकती है | मुट्ठी खोल सकती है मार्था |"[१०१]

कथानायक भारत आने पर अमेरिका जाना नहीं चाहता परंतु अपने घरवालों के लिए उसे अंततः मार्था के देश में लौटना ही पड़ता है |

मार्था :-

'निष्कवच' उपन्यास के 'दूसरे वृत्तांत' का प्रधान नारी पात्र है 'मार्था' | मार्था कथानायक को आश्रय देती है | उसकी मदद करती है | वह कथानायक के प्रति आकर्षित होती है | मार्था कथानायक के शरीर का प्रयोग केवल अपने सुख के लिए करती है | वह कथानायक के साथ यौनसंबंध अपनी आवश्यकता और अपनी शर्तों पर बनाती है |

मार्था पाश्चात्य नारियों की प्रतिनिधि है | वह मुक्त विचारों की लड़की है | मार्था का समूची पुरुष जाति के प्रति आक्रोश है | तभी तो वह गर्भपात करती है | कथानायक द्वारा विरोध करने पर कहती है-"मुर्ख यह मेरी देह का निजी मामला है | ....मैं अमिनोसेण्टेसिस के लिए गयी थी पता लगा लड़का है | तब तो ओर भी आसान हो गया फ़ैसला | भला मैं क्यों उनकी नस्ल को बढ़ाना चाहूँगी | दीज ब्रूटस | इन्होंने सदियों से हमें कुचल कर रखा है |"[१०२]डॉ.शशिकला त्रिपाठी लिखती है-"गर्भ ठहरने पर वह गर्भपात करने उतने ही सहज और निर्द्वन्द्व रूप से जाती है जैसे स्त्रियाँ श्रीवृध्दी के लिए ब्यूटी पार्लर जाती है |"[१०३]मार्था कथानायक से मानसिक रूप से जुड़ना नहीं चाहती बल्कि वह उसके साथ सिर्फ दैहिक संबंधों के माध्यम से जुड़कर रहना चाहती है | मार्था स्वतंत्र विचारों वाली लड़की है | वह अपने को किसी पुरुष से बाँधकर रखना नहीं चाहती | नायक को लगता है कि मार्था उसे भी एक न

एक दिन अपनी जिंदगी से निकाल देगी | मार्था कथानायक को बार-बार इस बात का अहसास कराती है कि वह न तो उसकी वाग्दता है और न ही विवाहिता | वह कथानायक से कहती है - "आँयम नॉट युअर प्रापर्टी मिस्टर |"[१०४]

कथानायक की माँ :-

निष्कवच उपन्यास के 'दूसरे वृत्तांत' में भी माँ की संवेदनशीलता व्यक्त होती है | इस वृत्तांत की माँ एक कॉलेज की रिटायर्ड प्रिंसीपल है | वह अपने घर का सारा काम स्वयं और बड़े आनंद से करती है | वह बड़ी समझदारी से अपना कर्तव्य पूरा करती है | दूसरे वृत्तांत में जो माँ है वह ममता से लबालब भरी हुई है | वह हमेशा अपने विदेश गए बेटे की चिंता में दिखाई देती है | इसी वजह से वह अपने बेटे को पत्र लिखती रहती है | पत्र में वह अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग ज़्यादा करती है | वह नहीं चाहती कि हिंदी शब्द पढ़ते समय उसके बेटे को कुछ तकलीफ हो | "माँ मेरी सुविधा-असुविधा को सर्वोपरी रखती हैं ? शायद उतना-सा भी कष्ट देना नहीं चाहती जो मुझे हिंदी पढ़ते समय होता है |"[१०५]

वृत्तांत दो की माँ विदेश में चले गये बेटे की फोटो टी.वी पर से हटा देती है | काँच के फ्रेम में मढ़ी फोटो बेटे के प्रति वात्सलता को भी काँच के समान कठोर एंव निर्जीव न बना दे इसलिए माँ अपने बेटे के फोटो को नजरों से परे रख देती है | माँ को लगता है कि उसका बेटा अमेरिका में खुशहाल है | उसकी खुशहाली के लिए माँ अपने मन को बेटे की अनुपस्थिति में जगाना सीख रही है | लेकिन यह जगाना भी आसान नहीं है | इस जगाने के पीछे उसे गहन पीड़ा की अनुभूति होती है- "अब जब मन ही जगाना है तो इन मायावी चीजों का क्या काम ?···बोलो क्या काम ?···फिर वही

रोयाँ...रोयाँ हँसने में आँसुओं को बाढ़ |"[१०६]

वसीम :-

वसीम कथानायक का दोस्त है | वह भी अमेरिका में रहता है | वसीम एक ऐसा है जिसके बारे में कहा जाता है -"सब्र वसीम की सीरत नहीं....आबरुदार अब्बा के कलगीदार फ़ैसले और अपने नतीजे के बीचोंबीच भौंचक्का,एक ऐसा वसीम है,जिसके पास दोस्ती का पूरा मनोविज्ञान निष्कवच है |"[१०७]वसीम के कारण ही कथानायक को स्वदेश अपने घर आने का मौका मिलता है | वसीम दरियादिल इन्सान है | कथानायक उसके सामने टिकट के पैसे की बात करता है,तब वह कहता है-"इतना सोचो मत | तुम्हारा किराया मैं दूँगा | चाहना तो कभी दे देना या न भी सही | तुम तो नहीं जा रहे थे | मैं ले जा रहा हूँ न !"[१०८] वसीम आज्ञाकारी पुत्र है | उसके परिवार वालों ने उसके लिए जो लड़की पसंद की थी, उसी के साथ वह शादी करता है | वह बुजुर्गों ने लिए हुए फैसले को ही योग्य मानता है |

राबर्ट्स :-

राबर्ट्स अमेरिकन फोटोग्राफर है | वह नायिका मार्था के स्टुडियो में नौकरी करता है | राबर्ट्स ही कथानायक को बेहोशी की हालत में स्टुडियो में लेकर आता है | राबर्ट्स के कारण ही नायक की जान बच जाती है | राबर्ट्स को अपने देश के प्रति प्रेम है, तभी तो वह कथानायक को कहता है कि हमारे देश में जरूर कुछ ऐसी खूबियाँ है, जिसकी वजह से तुम जैसे कितने ही लोग नसीब आजमाने चले आते है | राबर्ट्स को अमेरिकन होने का अभिमान है | वह "अमेरिकन होने की श्रेष्ठता को विण्डचीटर की तरह ओढ़े घूमता है |"[१०९]

वृत्तांत दो के गौण पात्र:-

कथानायक के पिताजी:-

कथानायक के पिता अनुशासनप्रिय है | वे नायक को विदेश जाने से रोकने की कोशिश करते है | वे चाहते थे कि उनका बेटा अपने देश में रहकर आगे की पढ़ाई करे | बेटे के समझाने पर वह उसे अमेरिका जाने की अनुमति देते है और उसे हिम्मत देते हुए कहते है-"देन गो माय मर्चंट सन | पुराने जमानों में लोग किस्मत आजमाने दूर देशों में जाते थे | अच्छा है, आजकल दोस्तों में से ही गॉडफादर निकल आते हैं | पर याद रहे,दोस्त से रिश्ता शुरू से ही बराबर रखना,मेहनत करनी है तो दबना कैसे ? एक बार दबे नहीं कि··· |"[११०]

प्रशांत:-

प्रशांत भी कथानायक का दोस्त है | किन्तु वह धोखेबाज है | वह नायक को नौकरी देने का वादा करके अमेरिका बुलाता है और खुद नायक को संकट में डालकर किसी लड़की के चक्कर में भाग जाता है |

भैया-भाभी:-

'निष्कवच'उपन्यास के वृत्तांत दो के कथानायक के भैया-भाभी का चित्रण गौण पात्र के रूप में हुआ है | नायक की भाभी शिक्षिका है | कथानायक की भाभी चाहती थी कि नायक उसके भाई को अपने साथ अमेरिका ले जाए | नायक का भाई भी अपने साले को अमेरिका भेजना चाहता है | वह अपने भाई से कहता है- "हम कई दिन से सोच रहे थे इनका भाई है न··· मेरा साला, उसे भी भेज दें | तुम स्पान्सर कर दो तो आसानी हो जाएगी | एक पैर जम जाएँ तो बाद वालों के भी धीरे-धीरे जम जाते हैं |"[१११]

कमली:-

कमली कथानायक के घर की नौकरानी है | नायक के भारत आने पर सबसे पहले नायक का बड़ा भाई नायक का कमली से परिचय कराते हुए कहता है-"कमली, यह फोटो वाले भैया हैं |"[११२] कमली अब फोटो कहाँ है ? कहकर वहाँ से भाग जाती है | कमली की बात सुनते ही नायक के मन में अपने फोटो के बारे में जानने की जिज्ञासा सुलग उठती है |

माली:-

माली राजस्थानी है | वह नायक के घर के बाग की देखभाल करता है | वह बीच-बीच में आकर पौधों को खाद डालता है | वह नायक को हमेशा 'कुँवर साब' कहकर बुलाता है |

लाला:-

लाला एक पानवाला है | नायक जब उसकी दुकान से भिड़ते हुए गुजर रहा था तब वह नायक को तुरंत ही पहचान लेता है | वह अपनी बोली में नायक को कुशल क्षेम पूछता है | वह नायक को बनारसी बीड़ा देता है | नायक उसे पान के पैसे देना चाहता है पर वह पैसे लेने से इनकार करते हुए कहता है-"कमाल है, भैय्या साब | अब इत्ता अनादर न करो | हम का इस लाइक भी नहीं ?"[११३]

इस तरह राजी सेठ के 'तत-सम' और 'निष्कवच' उपन्यास में जिन गौण चित्रण हुआ है | उन सभी पात्रों ने अपना प्रभाव उपन्यास में छोड़ दिया है |

राजी सेठ का अनुवाद कार्य:-

राजी सेठ को आमतौर पर एक कथाकार के रूप में ही देखा जाता है | राजी सेठ एक श्रेष्ठ कवि,कथाकार के साथ अनुवाद का

सृजन करने में उतनी ही कामयाब है,जितनी की कहानी, उपन्यास लिखने में | राजी सेठ ने कविता कहानी, उपन्यास के साथ साथ अनुवाद के क्षेत्र में भी अपनी कलम चलायी है | राजी सेठ रिल्के के पत्रों से काफी प्रभावित रही | परिणाम स्वरूप रिल्के के पत्रों को भाषाई दीवार तोड़कर हिंदी की चौहद्दी में लाने की एक सफल कोशिश उन्होंने की है | राजी सेठ ने निम्नांकित कृतियों का अनुवाद किया है-

पत्र युवा कवि के नाम-रिल्के के पत्रों का अनुवाद -१९९८

रिल्के के प्रतिनिधि पत्र-अनुवाद -१९९९

प्रस्तुत अध्याय में राजी सेठ के अनुवाद कार्य पर भी प्रकाश ड़ाला है |

राइनेर मारिया रिल्के का परिचय:-

जर्मन कवि राइनेर मारिया रिल्के का जन्म (प्राग,१८७५-१९२५) जिसका अवतरण पश्चिमी योरोप में प्रकृति की एक अभूतपूर्व घटना की तरह माना जाता है |"पश्चिमी योरोप में प्रकृति की एक अभूतपूर्व घटना की तरह प्राहा में जन्मा यह कवि आजीवन सृजनात्मकता की बाध्यताओं से आक्रान्त रहा | अस्तित्व और जीवन यापन की हर समस्या उसके तईं रचनात्मक चिंताओं से गुँथी रही वह एक ऐसा कवि है जिसने सृजन की क्षुधा को अपने लहू में निबद्ध माना | उसे पूर्णकालिक लेखक कहने की बजाय पूर्णमन:लेखक कहना ज़्यादा उपयुक्त है |"[११४]रिल्के ने शिक्षा के पहले पाँच वर्ष मिलिटरी अकादमी में बिताए, जिसे सदा उन्होंने वेदनापूर्ण बताया |

रिल्के ने अपना पहला काव्य संग्रह १९ वें वर्ष में लिखा | उन्होंने जीवन के कुल इक्यावन वर्षों में तीस कविता-संग्रह,

कहानियाँ, लेख, संस्मरण और एक उपन्यास की रचना भी की है | "नये भावबोध की तलाश में वह अपने समय की मुख्य साहित्यिक धाराओं से तटस्थ ही रहा और अनुभवों की विशिष्टता के लिए अनोखे संश्लिष्ट काव्यरूपों को जन्म दिया | काव्य क्षमता के उत्कर्ष पर वह उस पीड़क उत्कटता तक गया जहां 'होने' और 'देखने' के बीच एक विराट आध्यात्मिक बोध ही शेष रहा जाता है | उसका रचना-संसार अभी तक अनुद्घाटित है और हर नयी पीढ़ी पर आकलन का दबाव डालता है |"[११५]

रिल्के ४५ वर्ष की अपनी उम्र तक अपना श्रेष्ठतम लेखन कर चुका था | रिल्के ने अपनी मृत्यु के चार वर्ष पूर्व रचनात्मक उन्मेष में विश्वविख्यात 'दूनो शोक गीतों' की रचना की जिनमें नियती, मृत्यु और ईश्वर के बीच चिरंतन द्वंद्वों की करुण आतुर अभिव्यक्ति हुई है | इतने वर्षों बाद भी समीक्षा के मापदंड उन कविताओं के मर्म को खोल नहीं पाए हैं | रमेश दवे कहते हैं-"मात्र ५१ वर्ष की उम्र तक तीस कविता संग्रह, कहानियाँ, लेख, संस्मरण और उपन्यास लिखने वाला यह विलक्षण सर्जक जब अपनी मृत्यु से केवल चार वर्ष पूर्व 'दुइनो शोकगीतों' की रचना करके नियति, अस्तित्व, मृत्यु, सृष्टि और ईश्वर के बीच चिरंतर द्वंद्वों से टकराते हुए उनकी अर्थवत्ता का अन्वेषण करता है, तो लगता है जैसे कोई भारतीय ऋषि जर्मनी की धरती पर सृजन की नयी ऋचाएं रच रहा है | रिल्के के पत्रों का यह हिंदी अनुवाद यदि नाम और स्थानों को छोड़ कर पढ़ा जाये, तो ऐसा लगेगा जैसे पत्रों में व्याप्त आत्मीय आलोक सृजन में प्रकट हो कर सृष्टि आभा बन गया हो |"[११६]

राजी सेठ का रिल्के के बारे में कहना है-"रिल्के को जानना सृजनकर्म के मूर्तिमान स्वरूप को जानना है | मात्र इक्यावन वर्ष

के जीवनकाल में तीस कविता संग्रहों, अनगिनत लेखों, कहानियों ,समीक्षाओं, संस्मरणों, अनुवादों,पत्रों और एक अनुपम उपन्यास की उपलब्धि किसी सृजक के रचना-उत्पाद की गणना मात्र भी नहीं बल्कि सृजनात्मक ऋतुमयता में जीवन के सतत जागते रहने की पहचान है | सृजनकर्म रिल्के के लिए बौद्धिक चयन नहीं उसकी सरंचना के कोशाणुओं का तापमान है-उसके जीवन का मूलमंत्र |"[११७]

पत्र युवा कवि के नाम :-

राजी सेठ द्वारा अनुदित 'पत्र युवा कवि के नाम' में कुल दस पत्र है | वह पत्र रिल्के द्वारा लिखे गये थे | रिल्के ने यह दस पत्र किसी आत्मीय को नहीं बल्कि एक अपरिचित को लिखे थे | चार वर्षों के इस पत्र-व्यवहार में दोनों की कभी भेंट नहीं हो पायी थी | मिलिटरी अकादमी में दीक्षारत एक विद्यार्थी फ्रेंच जेवियर काप्पुस कवि बनने का उग्र आकांक्षी था | रिल्के का कविता संग्रह पढ़कर काप्पुस को लगा कि रिल्के ही मेरे आध्यात्मिक गुरु हो सकते है | इसी प्रत्याशा से काप्पुस ने अपनी कविताओं का पुलिंदा रिल्के को भेजा था और उसे पढ़कर अपनी राय भेजने की प्रार्थना की थी | काप्पुस की कविताओं को पढ़कर रिल्के ने अपनी राय पत्रों के माध्यम से दी | रिल्के के यहीं पत्र 'पत्र युवा कवि के नाम' पुस्तक में संग्रहीत है |

रिल्के द्वारा काप्पुस को भेजे गए सभी पत्र १७ फरवरी १९०३ से २६ दिसंबर १९०८ के बीच के है | लगभग छह वर्षों की इस कालावधी में रिल्के फ्रांस, इटली और स्वीडन में प्रवास के दौरान यात्राओं के बीच पत्रों के जरिए काप्पुस की जिज्ञासाओं का उत्तर देते है | रिल्के को काप्पुस में अपना ही कवि दिखायी दिया क्योंकि १९०३ और १९०८ के बीच दोनों रिल्के और काप्पुस अपने अपने

स्तर पर अनुभव के समय और अभिव्यक्ति के संकटों से गुजर रहे थे | रिल्के अपनी काव्ययात्रा के दूसरे दौरे में प्रवेश कर रहे थे जबकि काप्पुस ने अपनी काव्ययात्रा शुरू ही कर दी थी | यही वजह है कि रिल्के काप्पुस की जिज्ञासाओं में संभवतः अपनी समस्याओं के हल खोज रहे थे |

'पत्र युवा के नाम' एक ऐसी पुस्तक है जो रचनाकर्म के अनेकानेक प्रश्नों को तो उभारती है, जीवन के दूसरे पहलुओं पर भी नए ढंग से विचार करती है-जैसे रचनाकर्म,एकांत,प्रेम,यौन-संबंध, अवसाद और अदृश्य के साथ हमारे संबंध के बारे में सूत्रों जैसे निचोड़ दस पत्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है |

'पत्र युवा कवि के नाम' में जो पत्र है, उसमें से कुछ पत्रों के अंशों पर प्रकाश डाला है |

रचनाकर्म :-

जर्मन के सुप्रसिद्ध साहित्यकार राइनेर मारिया रिल्के के अपनी छोटी-सी पुस्तक में संग्रहीत पहला पत्र महत्त्वपूर्ण है | जिसमें रचनाकर्म को लेकर रिल्के ने कई सवाल उठाये है | काप्पुस जब रिल्के को कविताओं का पुलिंदा भेजता है, तब उसे पढ़कर रिल्के काप्पुस को १७ फरवरी १९०३ को पेरिस से पत्र भेजते हैं | वह काप्पुस को लिखते हैं-"एक ही काम है जो तुम्हें करना चाहिए-अपने में लौट जाओ | उस कारण को ढूँढने की कोशिश करो जो तुम्हें लिखने का आदेश देता है | अपने से पूछो यदि तुम्हें लिखने की मनाही हो जाये तो क्या तुम जीवित रहना चाहोगे ?" [११८]

असामान्य निर्देश :-

अपनी आयु के २७ वें वर्ष में लगभग अपने ही समवयस्क को आसामान्य निर्देश दे सकना आसान नहीं होता | रिल्के काप्पुस

को १७ फरवरी १९०३ को पेरिस से पत्र भेजते हैं | वह काप्पुस को प्रेम कविताओं से बचने की सलाह देते है-"प्रेम कविताएँ मत लिखो; उन सब कला-रूपों से बचो जो सामान्य और सरल हैं | उन्हें साध पाना कठिनतम काम है | वह सब 'व्यक्तिगत' विवरण जिनमें श्रेष्ठ और भव्य परंपराएँ बहुलता से समाई हों, बहुत ऊँची और परिपक्व दर्जे की रचना क्षमता मांगती है; अत: अपने को इन सामान्य विषय-वस्तुओं से बचाओ | उन चीजों के बारे में लिखो जिन्हें तुम्हारा रोज़ का जीवन हर समय तुम्हारे प्रस्तुत करने को तत्पर रहता है | अपने दु:खों और आकांक्षाओं का,उन सब विचारों का जो हर समय तुम्हारे मन से होकर गुज़रते हैं;सौंदर्य के प्रति आसक्त अपने विश्वासों का वर्णन करो |"[११९]

एकांत:-

रिल्के का सर्वोत्कृष्ट काव्य 'दुनो शोकगीत' स्फूर्त एकांत में समाधिस्थ होने के कारण ऊर्जिस्वत हुआ है | इसी उद्‌गार में पैढकर रिल्के अपनी 'अस्ति' की परिभाषा करता है और निर्भय होकर एकांत के कक्ष में प्रवेश करता है, क्योंकि "एकांत वहां अकेलापन नहीं, अभाव नहीं, अपने चैतन्य का विस्तार है | ज्ञात से अज्ञात, दृश्य से अदृश्य तक आने-जाने का रास्ता |"[१२०]

रिल्के काप्पुस को रोम से २३ दिसबंर १९०३ में एकांत क्या है, यह समझाते हुआ पत्र लिखते हैं-"उस एकांत का अर्थ ही क्या जो व्यापक न हो |...वस्तुतः हमें इच्छित है-विराट आंतरिक एकांत | अपने ही भीतर विचरण करना और बिना किसी से मिले-जुले घंटो अपनी ही निजता में बने रहने की क्षमता बटोरना |"[१२१] इस एकांत का उपयोग करना चाहिए तभी हम अपनी अपनी भाव-भावनाओं को अच्छी तरह से व्यक्त कर पायेंगे |

अवसाद:-

'अवसाद' जैसे आवेग की चर्चा भी उल्लेखनीय मानी जायेगी क्योंकि रिल्के के अभिमत में वह व्यक्ति के आंतरिक रसायन को बदलता है | रिल्के १२ अगस्त १९०४ को अवसाद के बारे में समझाते हुए काप्पुस को लिखते हैं-"डरो मत,यदि तुम्हारे भीतर तुम्हारे अब तक के जाने हुए अवसाद से बड़ा अवसाद पैदा होता है....तो तुम्हें समझ जाना चाहिए कि जीवन ने तुम्हें बिसारा नहीं है, बल्कि तुम्हारा हाथ थामे बचाने में लगा है |"[१२२]

किताबें पढ़ने की सलाह:-

रिल्के काप्पुस को इटली से ५ अप्रैल,१९०३ को जो पत्र लिखते है, उसमें वह काप्पुस को किताबें पढ़ने की सलाह देते हुए लिखते हैं-"याकोब्सन का संकलन 'सिक्स स्टोरीज' और उसका उपन्यास 'नील्स लीहने' ले आओ, और संकलन की पहली कहानी पढ़ना शुरू करो, जिसका शीर्षक 'मोगेंस' है | एक अपार संसार तुम्हें घेर लेगा-सुख,विपुलता और अकल्पनीय विशालता | इन पुस्तकों में विचरो | इनमें से कुछ अच्छा लगे तो आत्मसात करों,पर सर्वोपरि तो यह इन्हें प्यार करो तुम्हारे जीवन में कैसा भी समय आये यह प्रीति सहस्रामुखी होकर तुम्हें प्रतिदान देगी |"[१२३]

समीक्षा न पढ़ने का आग्रह :-

इटली से २३ अप्रैल,१९०३ को लिखे पत्र में काप्पुस को समीक्षा न पढ़ने की सलाह देते हुए रिल्के लिखते हैं -"एक बात का आग्रह करता हूँ की जहाँ तक हो सके, समीक्षा कम पढ़ो | ऐसे वक्तव्य पक्षधरता से भरे होते हैं | या तो वह अर्थहीन और जड़ हो चुके होते हैं या चालाक वाग्जाल की तरह होते हैं | इनमें से भी कभी एक पक्ष महत्त्व ले लेता है, कभी दूसरा | कलाकृति तो एक अमाप

ऐकांतिकता की उपज है | वहाँ तक पहुँचने के लिए समीक्षा का माध्यम तो एकदम बेकार है |"[१२४]

प्रेम की परिभाषा:-

रिल्के काप्पुस को रोम से १४ मई,१९०४ को लिखे पत्र में 'प्रेम' का अर्थ समझाते हैं-"प्यार का अर्थ घुल जाना,समर्पण कर देना या बंध जाना नहीं है,बल्कि परिपक्व होने की ओर प्रस्थान है;अपने स्वत्व में कुछ होने का,एक संसार बन जाने का;दूसरे के निमित्त अपने भीतर एक पूरा संसार समेट लेने का है |"[१२५]

रिल्के के प्रतिनिधि पत्र :-

'रिल्के के प्रतिनिधि पत्र' पुस्तक में रिल्के के नब्बे पत्र हैं | इस पुस्तक में'पत्र युवा कवि के नाम' पुस्तक के कुछ पत्र है | रिल्के के पत्रों का टैक्स्ट कितना रोचक और कितना काव्यात्मक है, यह जानने के लिए पत्रों के कुछ अंशों पर यहाँ प्रकाश ड़ाला है |

रिल्के का जीवनतथ्य :-

राजी सेठ ने जिन पत्रों को चुना है उनमें रिल्के का जीवनतथ्य स्वयं उनके ही शब्दों में उनके अपने विचार तत्वों में अभिव्यक्त हुआ है | एक पत्र रिल्के ने दक्षिण जर्मनी के एक कवि इमेनुअल फान बेडमन को १७ अगस्त १९०१ को लिखा जिसमें विवाह को लेकर रिल्के ने बात की है-

"मेरे विचार में,विवाह का अर्थ सारी सरहदें तोड़कर तेज़ी से आपसी सहचारिता स्थापित करना नहीं है | अच्छी शादी वह है,जिसमें दोनों में से हर एक,अपने को, दूसरे के एकांत का रक्षक नियुक्त करे और यह विश्वास भी पैदा करे कि उसकी सामर्थ्य में यही सबसे बड़ी चीज़ है जो वह दूसरे को दे रहा है |.....स्वीकारने या नकारने के चुनाव का एक मापदंड यह भी हो सकता है कि हम

सोचे कि क्या कोई व्यक्ति विवाह में दूसरे के एकांत की रक्षा का इच्छुक है या अपने एकांत को केवल एक ऐसे व्यक्ति को सौंपने जा रहा है जिसे अंधेरे में सज-धज कर आते उसने अभी अभी देखा है ?"[१२६]

कविता क्या है ? :-

रिल्के मूल रूप से कवि है और एक कवि अपने सृजन में जिस संगीत को ध्वनित करता है, वह संगीत कहाँ से आता है, यह बात रिल्के जर्मन उपन्यासकार फ्रेडरिक हुख को ६ जुलाई १९०२ के पत्र में लिखते हुए कहते हैं -

"मेरी कविताएँ मेरी आत्मा की खुशहाली से उपजती हैं | बड़े भूखंड,लंबी सड़के, नरम दूब, कड़ी सड़कों पर या शुभ्र हिम पर नंगे पाँव चलते होना, गहरे श्वास सुनना, केवल सुनना, घोर निश्शब्दता, लंबी शामों के प्रति नमित हो सकना, ये सब क्रियाएँ मेरी कविताओं की संपत्ति है |"[१२७]

कला एक कर्म :-

रिल्के रूसी भाषा की लेखिका और मनोचिकित्सक लू आंद्रिअस सलोमे जो रिल्के की सबसे घनिष्ठ मार्गदर्शिका मित्र थी,जिससे वह आमरण संपर्क में रहे | उसको कला के भ्रम को लेकर अपने ८ अगस्त,१९०३ के पत्र में लिखते है-"रूपांतरण की ऐसी महत् प्रक्रियाओं के चलते ही कला को स्वेच्छाचारी और दम्भ भरा मानने का भ्रम पैदा होता है जबकि कला एक विनम्र और विधि-विधान से संचालित कर्म है |"[१२८]

साहित्य और भाषा :-

रिल्के १० अगस्त को लिखे एक पत्र में रूसी भाषा की लेखिका लू आंद्रिअस सलोमे को साहित्य और भाषा को लेकर

लिखते हैं,"क्या साहित्य का हस्त कौशल भाषा प्रयोग में होता है, उसकी आंतरिकता,उसके विकास और परंपरा की गहरी पहचान में ?....जो कुछ भी मुझे विरासत में मिला है, मैं उसका अमित्र हूँ और जो कुछ मैंने अर्जित किया है वह बहुत कम है, इतना कम कि मैं लगभग संस्कृति शून्य हूँ | जीवन में एक दिशासम्मत अध्ययन को ज़ारी रखने की मैंने बार-बार कोशिश की | कुछ तो बाहरी कारणों से खंडित हुई और कुछ इस विचित्र-सी अनुभूति से, जिसने मुझे अचंभे में भी डाला कि मुझे अपने में निहित ज्ञान से आगे एक बीहड़ और वक्र रास्ते से ही पहुँचना होगा |"[१२९]

स्त्री कलाकार:-

रिल्के २५ जून,१९०२ को फ़्रॉउ जुली वायमन को लिखे पत्र में अपने जीवनसाथी और स्त्री कलाकार के गुणों के बारे में लिखते है- "वह युवती जो मेरे जीवन में अपरिहार्य रूप से जुड़ी है एक शिल्पी है | एक ऐसी कलाकार जिससे मैं महत परिणामों की आशा करता हूँ |....हमने एक प्यारी बच्ची रुथ को जन्म दिया है |....मेरा तो यह विश्वास है कि एक कलाकार स्त्री जो माँ है और अपने बच्चे के प्रति ममत्व रखती है खूब वयस्क होती है | अपनी कलात्मक क्षमता में वह हर ऐसी ऊँचाई तक पहुँच सकती है जिनपर उन्हीं दशाओं में काम करता पुरुष कलाकार पहुँचता है |...वह वैसे ही सघन विश्वास से उन उद्देश्यों का सामना करती है जैसे अपने उत्तमतम क्षणों में पुरुष कलाकार |"[१३०]

'रिल्के के प्रतिनिधि पत्र'पुस्तक के उत्तरार्ध में विश्वयुद्ध संबंधी कुछ पत्र है | यह पत्र राजी सेठ ने यह जानने के लिए चुने है कि युद्ध की विभीषिका का रिल्के जैसे एकांत प्रेमी रचनाकार पर क्या प्रभाव पड़ा | रिल्के के व्यक्तित्व में दीक्षित सैनिक और

एकनिष्ठ रचनाकार ये दोनों पहचानें संचित थी | विश्वयुद्ध जब तक चलता रहा रिल्के अत्यंत पीड़ित, हतोत्साह और अवसादपूर्ण मन:स्थिति में घिरे रहे | वह १० अक्तूबर,१९१५ के पत्र में ऐलन को लिखते हैं-"क्यों तीन,पाँच,दस व्यक्ति इकट्ठे,नगरचौक पर खड़े होकर नहीं चिल्लाते कि बस ! अब बहुत हो गया ! और अगर कोई वहाँ मार भी दिया जाता है तो उसकी जान उस 'बहुत हो चुके' की दारुणता को प्रकट करने के लिए मान जाएगी | जबकि हो यह रहा है कि इस विभीषिका में लुप्त लोग,बिना सोचे-समझे,ध्वंस का हिसाब लगाये बिना अपने आप को इसमें झोंकते जा रहे हैं |...क्या कोई भी ऐसा नहीं है जिसके लिए यह सब कुछ इतना असह्य हो कि वह और ज़्यादा सहने के लिए तैयार न हो |"[१३१]

रिल्के ने सैनिक पुरस्कार को अस्वीकार करके अपने सृजक रूप को अपनी अतिंम स्वीकृति दी |'रिल्के के प्रतिनिधि पत्र' पुस्तक का अंतिम पत्र इस स्वीकृति का साक्ष्य है -"इस वर्ष के मई मास में, समाचार-पत्रों के द्वारा जब पता लगा कि आपकी ओर से उसे सम्मान प्रदान किया जा रहा है तो उसने तत्काल ही इसे अस्वीकार करने का निर्णय लिया |....उसका यह अस्वीकार निजी रूप से अप्रकट रहने की इच्छा के कारण है, अपने काम के हक़ में यह एक कलाकार की अविकल्प बाध्यता है |"[१३२]

राजी सेठ के 'पत्र युवा कवि के नाम' और 'रिल्के के प्रतिनिधि पत्र' ये दोनों अनुवाद हिंदी के व्यापक रचना संसार में एक प्रकार का सर्जनात्मक और सकारात्मक हस्तक्षेप है | राजी सेठ अपने अंदर एक कवि और कथाकार का मानस जीती है, जो उनका मूल मानस है | अनुवाद उनके अध्ययन-अनुराग का अंग है | रिल्के के अनुवाद में जिस प्रकार की काव्यात्मक चुनौतियां हैं, जो

दार्शनिक भावमुद्राएँ है और जो सर्जनात्मक भाषा निवेश है, उसे राजी सेठ ने इतनी गहराई और इतने मर्म के साथ साधा है कि रिल्के के तमाम पत्र किसी मौलिक रचना या पत्रों में लिखे गये काव्य के समान लगते हैं |

राजी सेठ ने रिल्के के पत्रों के अनुवाद से अनुभव के आंतरिक उत्कर्ष का उस सृजन-कर्म से साक्षात्कार कराया है जिसमें प्रवेश करके हम स्वयं के अनुभव संसार को अधिक व्यापक और अधिक वैविध्य के साथ रच सकते हैं | राजी सेठ अपने अनुवाद कार्य के बारे में लिखती है कि "अनुवाद करते समय मैंने चाहा है कि यह प्रदीप्त आवेश मेरे भीतर भी अक्षुण्ण बना रहे | इन पत्रों के प्रति अपनी अदम्य प्रेरणा के उत्ताप के निकटतम रहने की मैंने चेष्टा की है | अनुवाद के प्रति उदासीनता या स्थगन इस भावावेग को नष्ट भी कर दे सकते थे | जिस आदीप्त तादात्म में से, मैं इस अनुवाद के समय गुजरी हूँ वह मेरे लिए अभूतपूर्व है |"[१३३]

राजी सेठ लिखती हैं-"अनुवाद में प्रवृत्त होते समय लग रहा था कि अपने रचनाकर्म को परे रखकर ऐसा उपक्रम करने का अपराध कर रही हूँ पर वस्तुतः तो इनके माध्यम से मैं अपना ही पुनःसंस्कार कर रही थी |"[१३४]

संदर्भ सूची

१. 'सदियों से' कहानी संचयन की भूमिका से, पृ.१८

२. राजी सेठ कथा सृष्टि एवं दृष्टि - डॉ.कश्मीरी लाल, पृ.१

३. राजी सेठ कथा सृष्टि एवं दृष्टि - डॉ.कश्मीरी लाल, पृ.२

४. राजी सेठ कथा सृष्टि एवं दृष्टि - डॉ.कश्मीरी लाल, पृ.२

५. राजी सेठ : संवेदना का कथा दर्शन - रमेश दवे, पृ.१८६

६. राजी सेठ : संवेदना का कथा दर्शन - रमेश दवे, पृ.१८६

७. राजी सेठ कथा सृष्टि एवं दृष्टि - डॉ.कश्मीरी लाल, पृ.२

८. राजी सेठ : संवेदना का कथा दर्शन - रमेश दवे, पृ.६

९. मानक हिंदी कोश - रामचंद्र वर्मा, पृ.१२४

१०.राजी सेठ का कथा साहित्य:चिंतन और शिल्प-डॉ.सरोज शुक्ला, पृ.२०

११. राजी सेठ : संवेदना का कथा दर्शन - रमेश दवे, पृ.१३४

१२. राजी सेठ : संवेदना का कथा दर्शन - रमेश दवे, पृ.६

१३. राजी सेठ : संवेदना का कथा दर्शन - रमेश दवे, पृ.४

१४. राजी सेठ : संवेदना का कथा दर्शन - रमेश दवे, पृ.१९१

१५. राजी सेठ : संवेदना का कथा दर्शन - रमेश दवे, पृ.१९१

१६. राजी सेठ : संवेदना का कथा दर्शन - रमेश दवे, पृ.१८४

१७. राजी सेठ कथा सृष्टि एवं दृष्टि - डॉ.कश्मीरी लाल, पृ.४

१८. राजी सेठ कथा सृष्टि एवं दृष्टि - डॉ.कश्मीरी लाल, पृ.४

१९. राजी सेठ कथा सृष्टि एवं दृष्टि - डॉ.कश्मीरी लाल, पृ.५

२०. राजी सेठ कथा सृष्टि एवं दृष्टि - डॉ.कश्मीरी लाल, पृ.५

२१. राजी सेठ कथा सृष्टि एवं दृष्टि - डॉ.कश्मीरी लाल, पृ.६

२२. राजी सेठ कथा सृष्टि एवं दृष्टि - डॉ.कश्मीरी लाल, पृ.६

२३. राजी सेठ कथा सृष्टि एवं दृष्टि - डॉ.कश्मीरी लाल, पृ.६
२४. राजी सेठ कथा सृष्टि एवं दृष्टि - डॉ.कश्मीरी लाल, पृ.७
२५. राजी सेठ कथा सृष्टि एवं दृष्टि - डॉ.कश्मीरी लाल, पृ.७
२६. राजी सेठ कथा सृष्टि एवं दृष्टि - डॉ.कश्मीरी लाल, पृ.७
२७. राजी सेठ कथा सृष्टि एवं दृष्टि - डॉ.कश्मीरी लाल, पृ.८
२८. राजी सेठ कथा सृष्टि एवं दृष्टि - डॉ.कश्मीरी लाल, पृ.८
२९. हिंदी के महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना - डॉ.उषा यादव, पृ.१०५
३०. तत-सम - राजी सेठ, पृ.२३
३१. तत-सम - राजी सेठ, पृ.२४.
३२. तत-सम - राजी सेठ, पृ.५१
३३. तत-सम - राजी सेठ, पृ.११७
३४. तत-सम - राजी सेठ, पृ.१४३
३५. तत-सम - राजी सेठ, पृ.१४६
३६. राजी सेठ : संवेदना का कथा दर्शन - रमेश दवे, पृ.६९
३७.राजी सेठ का कथा साहित्य:चिंतन और शिल्प-डॉ.सरोज शुक्ला, पृ.२९१
३८.हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार-डॉ.एम.वेंकटेश्वर,पृ.२५१
३९.हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार-डॉ.एम.वेंकटेश्वर,पृ.२५२
४०.हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार-डॉ.एम.वेंकटेश्वर,पृ.२५२
४१.राजी सेठ : संवेदना का कथा दर्शन - रमेश दवे, पृ.६५
४२.हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार-डॉ.एम.वेंकटेश्वर,पृ.२५४
४३.हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार-डॉ.एम.वेंकटेश्वर,पृ.२५४
४४.हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार-डॉ.एम.वेंकटेश्वर,पृ.२५५
४५.हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार-डॉ.एम.वेंकटेश्वर,पृ.२५६

४६. तत-सम - राजी सेठ, पृ.५३

४७. तत-सम - राजी सेठ, पृ.६८

४८.हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार-डॉ.एम.वेंकटेश्वर,पृ.२५९

४९. तत-सम - राजी सेठ, पृ.२१

५०. तत-सम - राजी सेठ, पृ.१८

५१. तत-सम - राजी सेठ, पृ.२३

५२. तत-सम - राजी सेठ, पृ.२८

५३. तत-सम - राजी सेठ, पृ.२७.

५४. निष्कवच - वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृ.११

५५. निष्कवच - वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृ.३४

५६ निष्कवच - वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृ.३४

५७. निष्कवच - वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृ.३७

५८. निष्कवच - वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृ.४९

५९. निष्कवच - वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृ.५४

६०. राजी सेठ : संवेदना का कथा दर्शन - रमेश दवे, पृ.४५

६१. निष्कवच - वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृ.८०

६२. निष्कवच - वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृ.८३

६३. निष्कवच - वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृ.९१

६४. निष्कवच - वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृ.९२

६५ राजी सेठ : संवेदना का कथा दर्शन - रमेश दवे, पृ.४२

६६. निष्कवच - वृत्तांत दो- राजी सेठ, पृ.६७

६७. निष्कवच - वृत्तांत दो- राजी सेठ, पृ.११२

६८. निष्कवच - वृत्तांत दो- राजी सेठ, पृ.११३

६९. निष्कवच - वृत्तांत दो- राजी सेठ, पृ.११३

७०. राजी सेठ : संवेदना का कथा दर्शन - रमेश दवे, पृ.५२

७१. राजी सेठ : संवेदना का कथा दर्शन - रमेश दवे, पृ.४८

७२.राजी सेठ का कथा साहित्य:चिंतन और शिल्प - डॉ.सरोज शुक्ला,पृ.२६४

७३. निष्कवच - वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृ.१२

७४. निष्कवच - वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृ.१२.

७५. राजी सेठ:संवेदना का कथा दर्शन - रमेश दवे, पृ.४१

७६. राजी सेठ का कथा साहित्य:चिंतन और शिल्प - डॉ.सरोज शुक्ला, पृ.२६५

७७. निष्कवच - वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृ.३६

७८. निष्कवच - वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृ.८४

७९. राजी सेठ का कथा साहित्य : चिंतन और शिल्प - डॉ.सरोज शुक्ला, पृ.२६६

८०. महिला उपन्यासकार - डॉ.मधु सिंधु पृ.१३५

८१. राजी सेठ : संवेदना का कथा दर्शन - रमेश दवे, पृ.४२

८२. निष्कवच - वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृ.७५

८३. निष्कवच - वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृ.८१

८४. निष्कवच - वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृ.६५

८५. निष्कवच - वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृ.६१.

८६. निष्कवच - वृत्तांत एक -राजी सेठ, पृ.१८

८७ राजी सेठ का कथा साहित्य : चिंतन और शिल्प - डॉ.सरोज शुक्ला, पृ.२७२

८८. निष्कवच-वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृ.११

८९. निष्कवच-वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृ.५३

९०. राजी सेठ का कथा साहित्य:चिंतन और शिल्प - डॉ.सरोज शुक्ला, पृ.२६८

९१. निष्कवच - वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृ.१७
९२. निष्कवच - वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृ.१८
९३. निष्कवच - वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृ.२१
९४. निष्कवच - वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृ.१५
९५. महिला उपन्यासकार - डॉ.मधु सिंधु,पृ.८२
९६. निष्कवच - वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृ.२९
९७. महिला उपन्यासकार - डॉ.मधु सिंधु,पृ.८२
९८. निष्कवच - वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृ.१०
९९ निष्कवच - वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृ.१९
१००.निष्कवच - वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृ.२०.
१०१.निष्कवच - वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृ.९५
१०२.निष्कवच - वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृ.९२
१०३ राजी सेठ का कथा साहित्य : चिंतन और शिल्प - डॉ.सरोज शुक्ला, पृ.२८९
१०४. निष्कवच - वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृ.११५
१०५. निष्कवच - वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृ.५९
१०६. निष्कवच - वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृ.११२
१०७. निष्कवच - वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृ.६३
१०८. निष्कवच - वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृ.६३
१०९ निष्कवच - वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृ.८५
११०. निष्कवच - वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृ.६५
१११. निष्कवच - वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृ.१०४
११२. निष्कवच - वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृ.६७
११३. निष्कवच - वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृ.१०२
११४.आवरण पृष्ठ पर मुद्रित परिचय से (रिल्के के प्रतिनिधि पत्र)

११५. आवरण पृष्ठ पर मुद्रित परिचय से(रिल्के के प्रतिनिधि पत्र)

११६. राजी सेठ : संवेदना का कथा दर्शन - रमेश दवे, पृ.१७६

११७.- रिल्के के प्रतिनिधि पत्र - राजी सेठ, पृ.७

११८. पत्र युवा कवि के नाम - राजी सेठ, पृ.३

११९. पत्र युवा कवि के नाम - राजी सेठ, पृ.४

१२०. पत्र युवा कवि के नाम - राजी सेठ, पृ.११

१२१. पत्र युवा कवि के नाम - राजी सेठ, पृ.३३

१२२. पत्र युवा कवि के नाम - राजी सेठ, पृ.५६

१२३. पत्र युवा कवि के नाम - राजी सेठ, पृ.१०

१२४. पत्र युवा कवि के नाम - राजी सेठ, पृ.१४

१२५. पत्र युवा कवि के नाम - राजी सेठ, पृ.४१

१२६. रिल्के के प्रतिनिधि पत्र - राजी सेठ, पृ.३६

१२७. रिल्के के प्रतिनिधि पत्र - राजी सेठ, पृ.४७

१२८. रिल्के के प्रतिनिधि पत्र - राजी सेठ, पृ.६९

१२९. रिल्के के प्रतिनिधि पत्र - राजी सेठ, पृ.७६

१३०. रिल्के के प्रतिनिधि पत्र - राजी सेठ, पृ.४१

१३१. रिल्के के प्रतिनिधि पत्र - राजी सेठ, पृ.१७९

१३२. रिल्के के प्रतिनिधि पत्र - राजी सेठ, पृ.१९६

१३३. पत्र युवा कवि के नाम - राजी सेठ, पृ.१७

१३४. पत्र युवा कवि के नाम - राजी सेठ, पृ.१९